"विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं एवं सम्बंधित कारकों का विश्लेषणात्मक अध्ययन"

जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं

के शिक्षा अधिस्नातक (एम.एड.)

उपाधि की आशिंक

पुर्ति हेतु प्रस्तुत

लघु शोध प्रबंध

निर्देशक

डॉ. गिरिराज भोजक

(सहायक आचार्य)

शोधकर्त्री

सरिता यादव

(एम.एड. छात्रा)

शिक्षा विभाग

जैन विश्व भारती संस्थान

लाडनूं – 341306 (राजस्थान)

घोषणा पत्र

मैं सरिता यादव शोधकर्त्री जैन विश्वविद्यालय लाडनूं यह द्योषणा करती हूँ कि मैंने अपना लघु शोध प्रबंध का कार्य जिसका शीर्षक **"विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं एवं सम्बंधित कारकों का विश्लेषणात्मक अध्ययन" डॉ गिरिराज भोजक** के कुशल एवं प्रेरणास्पद मार्गदर्शन में पूर्ण किया।

दिनांक–

शोधकर्त्री

सरिता यादव

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता हैं कि **सरिता यादव एम.एड़ (छात्रा)** द्वारा **"विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य सम्बंधित समस्याओं एवं सम्बंधित कारकों का अध्ययन** विषय पर लघु शोध प्रबंध का कार्य मेरे निर्देशन में सम्पन्न किया गया है।

निर्देशक

डॉ. गिरिराज भोजक
(सहायक आचार्य)
जैन विश्वभारती संस्थान लाडनूं

आभार प्रसून

सर्वप्रथम मैं मां सरस्वती को नमन करती हूँ।

शिक्षकों का मेरे जीवन में योगदान अनमोल है, शब्दों से परे है।
इसके लिए मैं उनकी सदा आभारी रहूँगी,
जिन्होंने मेरे जीवन को दिशा देने में सहायता की है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध **"विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं एवं सम्बंधित कारकों का विश्लेषणात्मक अध्ययन"** को विद्वतजनों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अति प्रसन्नता की अनुभूति हो रही हे। यह लघु शोध प्रबन्ध मेरा प्रथम प्रयास है, जिसे सौभाग्यवश इस प्रतिष्ठित महाविद्यालय के विद्वतजनों को आशीष व संरक्षण प्राप्त हुआ है। शोधार्थी ने एम.एड. आंशिक पूर्ति हेतु प्रस्तुत किया है। अतः उनके प्रति आभार प्रदर्शन करना मैं अपना कर्तव्य समझती हूँ। आभार प्रदर्शन करते हुए मैं अपनी भावनाओं को शब्दों में व्यक्त करने में असमर्थ हूँ। फिर भी मैंने आभार प्रदर्शन करना मैं अपना कर्तव्य समझती हूँ। आभार प्रदर्शन करते हुए मैं अपनी भावनाओं को शब्दों में व्यक्त करने में असमर्थ हूँ।

फिर भी मैंने आभार व्यक्त करने का प्रयास किया है। इस शोध को प्रभावी और सफलतापूर्वक पूर्ण कराने का श्रेय मेरे **निर्देशक (सहायक आचार्य) डॉ. गिरिराज भोजक** को है, जिनका विद्वतापूर्ण मार्गदर्शन एवं सूक्ष्म पर्यवेक्षण में यह शोध प्रबन्ध पूर्ण हुआ है, इसके लिए मैं ऋणी रहूँगी। इन्होंने अपने व्यक्त जीवन के अमूल्य क्षणों में से इस कार्य को सम्पूर्ण कराने हेतु उन्होंने जिस निष्ठा के साथ सहयोग किया है वह अविस्मरणीय है। मैं नतमस्तक हो इन्हें अपना हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ।

इस शोध प्रबन्ध को समय पर पूर्ण करने का श्रेय, **मेरे निर्देशक (सहायक आचार्य) डॉ. गिरधारी लाल शर्मा, विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन तथा समस्त गुरूजन डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. भावाग्राही प्रधान, डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. गिरिराज भोजक, डॉ. आभा सिंह, डॉ. सरोज राय, डॉ. अमिता जैन, पुस्तकालयाध्यक्ष महिमा जैन (शिक्षा विभाग)** जैन विश्व भारती शिक्षण संस्थान लाडनू, जिला नागौर को जाता है, जिनके विद्वतापूर्ण मार्गदर्शन, स्नहे एवं सूक्ष्म पर्यवेक्षण में यह शोध प्रबन्ध पूर्ण हुआ है। इसके लिए मैं उनकी ऋणी रहूँगी। वस्तुतः शोध प्रबन्ध उनके निरन्तर पथ–प्रदर्शन एवं सक्रिय सहयोग का ही परिणाम है। मैं नतमस्तक हो उनका हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ। प्रेरणापूर्ण प्रोत्साहन ने लघु शोध प्रबन्ध कार्य को सरल एवं सहज बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मैं उन लेखकों, विचारकों का भी हदय से कृतज्ञ हूँ जिनके समावेश इस लघु शोध कार्य में स्थान–स्थान पर किया गया है।

मैं अपने **सास–ससुर श्रीमती विद्या देवी, श्री बलबीर सिंह जी, माता–पिता श्रीमती संतोष देवी, श्री लालसिंह यादव, पति श्री गजराज यादव, पुत्र हितेश यादव, मित्र मंजु, सपनेश, गौतम, अनिता कुमारी, सोनिका शर्मा** का सहृदय से आभार प्रकट करती हूँ, क्योंकि इनके सहयोग से ही मेरा यह शोध कार्य पूर्ण हो पाया है।

अंत में मैं **एन.के. फोटो कॉपियर्स** के **श्री पवन कुमार सैन** की भी आभारी हूँ जिनके अथक परिश्रम, अनुभव एवं सहयोग से ही यह लघु शोध प्रबंध कलात्मक रूप से पूर्ण किया जाना संभव हो सका है। यदि इस लघु शोध प्रबंध की प्रस्तुति आकर्षक, सुन्दर एवं स्पष्ट एवं समय से देय बन पडी है, तो इनका श्रेय निःसंदेह एन.के. फोटो कॉपियर्स को दिया जाना चाहिए।

अंत में परम पिता परमात्मा को शत्–शत् नमन करती हूँ जिन्होंने मुझे इस योग्य बनाया कि मैं प्रस्तुत शोध का अध्ययन कर सकी।

स्थान–लाडनूं **प्रस्तुतकर्त्री**

दिनांक– **मन्जु**

(एम.एड. छात्रा)

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय वस्तु	पेज न.
1.	**प्रथम अध्यायः समस्या परिचय**	**1-14**
1.1	प्रस्तावना	2-10
1.2	समस्या से उभरने वाले प्रश्न	10
1.3	समस्या का औचित्य	10-12
1.4	समस्या कथन	12
1.5	तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण	12
1.6	शोध के उद्देश्य	12-13
1.7	शोध की परिकल्पनाएँ	13
1.8	शोध विधि	13
1.9	परिसीमन	13-14
1.10	न्यादर्श	14
1.11	शोध में प्रयुक्त उपकरण	14
1.12	शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी	14
2.	**द्वितीय अध्यायः सम्बंधित साहित्य का पुनरावलोकन**	**15-33**
2.1	प्रस्तावना	16
2.2	सम्बंधित साहित्य का अर्थ एवं परिभाषाएँ	16-18
2.3	सम्बंधित साहित्य के सर्वेक्षण के उद्देश्य	18
2.4.	सम्बंधित साहित्य की सूचनाओं के स्त्रोत	19
2.5	शोध अध्ययन से सम्बंधित साहित्य	20-33
3.	**तृतीय अध्यायः शोध विधि न्यादर्श एवं उपकरण**	**34-**
3.1	प्रस्तावना	35
3.2	अनुसंधान का अर्थ	36
3.3	अनुसंधान की परिभाषा	36-37
3.4	परिकल्पना	37-41
3.5	जनसंख्या	41
3.6	न्यादर्श	41-44
3.7	अनुसंधान की विधियाँ	44-45
3.8	अध्ययन में प्रयुक्त विधि	45-49
3.9	उपकरण एवं प्रविधि	49-55

3.10	अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी	56-57
4.	**चतुर्थ अध्याय– तथ्यों का विश्लेषण वर्गीकरण एवं व्याख्या**	**58-70**
4.1	भूमिका	59
4.2	सारणीयन	60
4.3	सारणीयन का अर्थ व परिभाषा	60
4.4	सारणीयन के उद्धेश्य	61
4.5	सारणीयन के गुण	61
4.6	सारणीयन की सीमाएं	62-70
5.	**पंचम अध्याय– शोध का साराशं एवं निष्कर्ष**	**71-**
5.1	प्रस्तावना	71
5.2	समस्या कथन	71
5.3	शोध के उद्देश्य	71-72
5.4	शोध की परिकल्पनाएँ	72
5.5	शोध विधि	73
5.6	न्यादर्श	73
5.7	उपकरण	73
5.8	शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी	73
5.9	शोध के परिणाम एवं निष्कर्ष	74-76
5.10	शैक्षिक निहितार्थ	76-77
5.11	भावी शोध हेतु सुझाव	77
5.12	सन्दर्भ ग्रन्थ सूची	
5.13	परिशिष्ट	

प्रथम अध्याय

समस्या परिचय

"शैक्षिक अनुसंधान वह प्रक्रिया है जो शैक्षिक परिस्थितियों में व्यवहार के विज्ञान का विकास करने की ओर निर्देशित है। इस प्रकार के विज्ञान का अंतिम उद्देश्य ऐसा ज्ञान प्रदान करना है, जो शिक्षक के लिए सबसे अधिक प्रभावकारी पद्धतियों के द्वारा अपने लक्ष्यों मे सहायक हो सके।"

.....डब्ल्यू.आर.बोर्ग

प्रथम अध्याय
समस्या परिचय

1.1. प्रस्तावनाः–

शिक्षा मनुष्य की अन्तर्निहित प्रवृतियों का शोधन और मार्गान्तीकरण करके उसे समाज का एक सक्रिय सदस्य बनाती हैं जिससे वह अपने कार्यों का निर्वहन कुशलता से करता है बालक के अन्दर निहित प्रकृति प्रदत्त शक्तियाँ बीज रूप में होती है। शिक्षा इन बीज रूपी प्रकृति प्रदत्त शक्तियों को वृक्ष रूप में विकसित करने का साधन है। शिक्षा का सीधा संबंध बालक के मानसिक स्वास्थ्य से है। मानसिक स्वास्थ्य से तात्पर्य मन और मस्तिष्क का स्वास्थ्य रहकर कार्य करने की क्षमता बनाये रखना है। शारीरिक स्वास्थ्य की तरह ही मानसिक स्वास्थ्य भी जरूरी है। बालक का मानसिक स्वास्थ्य अच्छा होगा तभी वह समुचित रूप से वांछित शिक्षा ग्रहण कर सकता है। मानसिक रूप से स्वस्थ बालक वातावरण से सामंजस्य स्थापित कर लेता है। तथा हर परिस्थिति को अपने अनुकूल बनाने का प्रयत्न करता है। जो व्यक्ति वातावरण से समायोजन नहीं कर पाता उससे मानसिक दोष आ जाता हैं तथा उसका मानसिक स्वास्थ्य बिगड़ जाता है। मानसिक स्वास्थ्य का उद्देश्य व्यक्ति की वृद्धि विकास और कार्यो के धनात्मक पक्ष की ओर ध्यान देना है। ताकि उसकी रचनात्मक शक्ति में वृद्धि हो, उसका जीवन सहज हो वह आडम्बर से मुक्त होकर प्रभावी जीवन जी सके।

1.1.1. मानसिक स्वास्थ्यः–

मानसिक स्वास्थ्य वह दशा हैं जिसमें व्यक्ति अल्पमत श्रम कठिन से कठिन कार्य भी सरलता से कर लेता है। मानसिक स्वास्थ्य व्यक्ति के शारीरिक विकास

एवं स्वास्थ्य की सर्वप्रथम आवश्यकता है। हमारा मानसिक स्वास्थ्य परस्पर विरोधी भावनाओं, इच्छाओं तथा कामनाओं का एक वृहत संग्रहालय है। इस कारण हमारी मानसिक स्थिति ही प्रमुख रूप से हमें स्वस्थ अथवा अस्वस्थ अनुभव करने को बाध्य करती है। मानसिक संघर्षो से ग्रसित व्यक्ति सर्वोत्तम एवं सर्वाधिक भौतिक संसाधनों का लाभ नहीं उठा सकता। मानसिक अस्वस्थता व्यक्ति के व्यक्तित्व में विकृतियाँ उत्पन्न कर उसके विकास में बाधाएँ उत्पन्न करती है। तथा उसे जीवन के आनन्द से वंचित करती है।

मैनिगर अपनी पुस्तक में लिखते हैं कि हम मानसिक स्वास्थ्य की परिभाषा अधिकतम प्रयोगात्मकता और आनन्द के साथ मानव प्राणियों का संसार से परस्पर सामंजस्य के रूप मे कर सकते है। यह एक समभाव जागरूक बुद्धि सामाजिक रूप से संतुलित व्यवहार और एक आनन्दमय मानसिक स्थिति बनाये रखने की योग्यता है।

1.1.2. मानसिक स्वास्थ्य की परिभाषाएँः–

(1). **लेडल के अनुसारः–** "मानसिक स्वास्थ्य का अर्थ हें वास्तविकता से पर्याप्त सामंजस्य करने की योग्यता।"

(2). **फ्रेडसन के अनुसारः–** "मानसिक स्वास्थ्य और अधिगम से सफलता का बहुत घनिष्ठ सम्बंध है।"

(3). **कुप्पूस्वामी के अनुसारः–** "मानसिक स्वास्थ्य का अर्थ मानसिक रोगों की अनुपस्थिति नहीं है। इसके विपरित यह व्यक्ति के दैनिक जीवन का सक्रिय और निश्चित गुण हैं यह गुण उस व्यक्ति के व्यवहार में व्यक्त होता हैं जिसका शरीर और मस्तिष्क एक ही दिशा में साथ–साथ कार्य करते है।

उसके विचार, भावनाएँ और क्रियाएं एक ही उद्देश्य की ओर सम्मिलित रूप से कार्य करती है।" मानसिक स्वास्थ्य, कार्य की ऐसी आदतों और व्यक्तियों तथा वस्तुओं के प्रति ऐसे दृष्टिकोण को व्यक्त करता हैं, जिससे व्यक्ति को अधिकतम संतोष और आनन्द प्राप्त होता हैं, पर व्यक्ति को यह संतोष और आनन्द उस समूह या समाज से जिसका वह सदस्य होता हैं तनिक भी विरोध किये बिना प्राप्त करना पडता हैं इस प्रकार मानसिक स्वास्थ्य समायोजन की वह प्रक्रिया हैं जिसमें समझौता सामंजस्य विकास और निरन्तरता का समावेश रहता है।

1.1.3. मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति की विशेषताएँः–

1. आत्मविश्वासः–

मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति में यह आत्मविश्वास होता हैं कि वह अपनी योग्यता से सफलता प्राप्त कर सकता है। उसे यह भी विश्वास होता हैं कि वह प्रत्येक कार्य को उचित विधि से कर सकता है।

2. जीवन–दर्शनः–

ऐसे व्यक्ति का एक जीवन दर्शन होता हैं जो उसके दैनिक कार्यों को अर्थ और उद्देश्य प्रदान करता हैं उसके जीवन दर्शन इस संसार से दूर रहने की प्रवृत्ति नहीं होती है। वह अपने कर्तव्यों और उत्तरदायित्वों की कभी भी अवहेलना नहीं करता है।

3. संवेगात्मक परिपक्वताः–

मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति अपने व्यवहार में संवेगात्मक परिपक्वता का प्रमाण होता हैं इसका अभिप्राय यह है कि उसमें भय, क्रोध, ईर्ष्या आदि संवेगों

को नियन्त्रण में रखने और उनकों वांछनीय ढंग से व्यक्त करने की क्षमता होती है। वह भय क्रोध और चिन्ताओं से अस्त व्यस्त नहीं होता।

4. वातावरण का ज्ञानः—

मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति को वातावरण और उसकी शक्तियों का ज्ञान होता है। इस ज्ञान के आधार पर वह निर्भर होकर भावी योजनाएँ बनाता है। उसमें जीवन की वास्तविकताओं का उचित ढंग से सामना करने की शक्ति होती है।

5. सामंजस्य की योग्यताः—

मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति में सामंजस्य की योग्यता पाई जाती हैं ऐसे व्यक्ति दूसरों के विचारों और समस्याओं को व उसमें पाई जाने वाली विभिन्नताओं को स्वाभाविक बात समझता है।

6. निर्णय करने की योग्यताः—

मानसिक रूप से स्वस्थ्य व्यक्ति में निर्णय करने की योग्यता होती है। वह स्पष्ट रूप से विचार करके प्रत्येक कार्य के सम्बंध में उचित निर्णय कर सकता है।

7. शारीरिक स्वास्थ्य के प्रति ध्यानः—

मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति अपने शारीरिक स्वास्थ्य के प्रति पूर्ण ध्यान देता हैं वह स्वस्थ रहने के लिए नियमित जीवन व्यतीत करता है।

8. आत्मसम्मान की भावनाः—

मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति में आत्मसम्मान की भावना होती हैं वह अपनी योग्यता और महत्व को भलीभाँति समझता हैं एवं दूसरों से उनके सम्मान की आशा करता है।

9. आत्म मूल्यांकन की क्षमताः–

ऐसे व्यक्ति में आत्म–मूल्यांकन की क्षमता होती हैं उसे अपने गुणों दोषों विचारों और इच्छाओं का ज्ञान होता हैं वह निष्पक्ष रूप से अपने व्यवहार के औचित्य और अनौचित्य का निर्णय कर सकता है।

मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले कारकः–

1. शारीरिक स्वास्थ्य का प्रभावः–

शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य एक दूसरे के पूरक होते है। शारीरिक स्वास्थ्य मानसिक स्वास्थ्य को जन्म देता है। यदि छात्र शारिरिक दृष्टि से कमजोर हैं या रोगग्रस्त हैं तो उसका प्रभाव निश्चित ही उसके स्वास्थ्य पर पड़ेगा।

2. वंशानुक्रमः–

वंशानुक्रम का भी बालक के मानसिक स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव पड़ता है। वास्तव में बालक जिस वंश या परिवार में जन्म लेता हैं उससे वह मानसिक दुर्बलता प्राप्त करता है साथ ही कुछ मानसिक एवं स्नायु संबंधी रोग भी वह वंशानुक्रम से प्राप्त करता है।

3. विद्यालय का वातावरणः–

घर के पश्चात् विद्यालय में बालक अधिकाशं समय व्यतीत करते हैं इस कारण बालक के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने में विद्यालय का बहुत बडा हाथ होता है। विद्यालय से संबंधित महत्वपूर्ण कारण निम्नलिखित है–

(1). यदि विद्यालय का कठोर नियन्त्रण का वातावरण हैं तो बालक ऐसे वातावरण में सोचने व विचारने का साहस नहीं कर पाता इस कारण भय एवं तनाव का वातावरण उसके मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डालता है।

(2). यदि विद्यालय का वातावरण असुरक्षित हैं, जाति–पाति का भेद पाया जाता हैं, निरंतर झगड़े होते रहते हैं तो इससे बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

(3). शिक्षकों का व्यवहार पक्षपातपूर्ण होने तथा सहानुभूतिपूर्ण न होने से अथवा अत्यधिक शारिरिक दण्ड आदि देने से छात्र भयभीत रहते हैं तथा उनका मानसिक स्वास्थ्य बिगड़ जाता है।

(4). वर्तमान परीक्षा प्रणाली का बालकों के मानसिक स्वास्थ्य पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। इस प्रणाली के द्वारा बालकों का मूल्यांकन सही

प्रकार से नहीं हो पाता इस कारण बालक वातावरण से अपने आप समायोजित नहीं कर पाता है।

(5). शैक्षिक व व्यावसायिक निर्देशन के अभाव में छात्र अपने आप को धिक्कार तथा परेशान होता पाया जाता हैं इसके अभाव में छात्र का मानसिक संतुलन बिगड़ जाता है।

4. पाठ्यक्रमः–

यदि पाठ्यक्रम सभी विद्यार्थियों के लिए समान होता हैं और यदि वह अत्यधिक बोझिल होता हैं यदि वह बालकों की मांगों और आवश्यकताओं को पूर्ण नहीं करता हैं यदि वह उनकी रूचियों और क्षमताओं के प्रतिकूल होता हैं तो वह उनके मानसिक स्वास्थ्य को खो बैठता है।

5. कक्षा का वातावरणः–

यदि कक्षा का वातावरण भय और आतंक पर आधारित होता हैं यदि विद्यार्थियों को छोटी–छोटी त्रुटियों के लिए अविवेकपूर्ण ढंग से दण्ड दिया जाता है तो उसको उनके मानसिक स्वास्थ्य से बलपूर्ण वंचित किया जाता है।

6. पारिवारिक वातावरणः–

सामान्यतः परिवार की बुरी परिस्थितियाँ बालक के मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डालती है।

ये परिस्थितियाँ निम्नलिखित हैं–

(1). परिवार की आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण चिन्ता एवं असुरक्षा की भावना बनी रहती है।

(2). माता–पिता में आपसी मनमुटाव, पृथकता एवं अलगाव से बालक के मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पडता है।

(3). माता–पिता का व्यवहार यदि अत्यधिक मोह अथवा घृणा का है तो बालक गलत संगति में पडकर माता–पिता के प्रति घृणा के भाव विकसित कर लेता हैं जिससे उसमें भावना ग्रन्थियाँ विकसित हो जाती है। अत्यधिक प्यार में बालकों का समायोजन बिगड़ जाता है।

(4). बालक को घर में विशिष्ट मान्यता न मिलना।

(5). जब माता–पिता एक बच्चे को दुसरे बच्चे की अपेक्षा अधिक प्यार करने लगते हैं तो इससे बच्चा माता–पिता व अधिक प्यार करने वाले बच्चे से घृणा व ईर्ष्या करने लगता है।

(6). घर में उचित अनुशासन की कमी के कारण बालकों के मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

सामाजिक प्रभावः–

मानव एक सामाजिक प्रणी है। उसका विकास समाज में ही होता है। घर तथा विद्यालय समाज के ही अंग होते है। अच्छे सामाजिक संगठन में घर तथा विद्यालय का वातावरण ठीक रहता है। अच्छे वातावरण के प्रभाव से प्रेम, स्नेह, सहयोग, परोपकार, सहानुभूति आदि भावों का विकास होता है।

समाज जनता की भलाई के लिए, शिक्षा, स्वास्थ्य, मनोरंजन के साधन, पुस्तकालय, पार्क एवं निर्देशन सेवा केन्द्र आदि स्थापित करता है। इस प्रकार के समाज में बालक सुरक्षा, स्वतन्त्रता आदि महसूस करता हैं तथा अपना समायोजन

कर लेता हैं इसके विपरीत जिस समाज में लड़ाई झगड़े होते रहते हैं तो वहाँ बालकों का मानसिक समायोजन बिगड़ जाता है।

1.2. समस्या से उभरने वाले प्रश्नः–

प्रस्तावित समस्या कुछ प्रश्नों को जन्म देती हैं जो इस प्रकार हैंः–

(1). मानसिक स्वास्थ्य की समस्यायें क्या हैं?

(2). मानसिक स्वास्थ्य की शिक्षा का वर्तमान समाज में क्या महत्व हैं?

(3). मनसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले कारक कौन–कौनसे हैं?

(4). मनसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति की क्या विशेषताऐं हैं?

(5). बालक के मानसिक स्वास्थ्य में बाधा डालने वाले घटक कौन–कौनसे हैं?

1.3. समस्या का औचित्यः–

जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए शारीरिक स्वास्थ्य जितना आवश्यक हैं उससे कहीं अधिक आवश्यक हैं मानसिक स्वास्थ्य जो व्यक्ति वातावरण से समायोजन नहीं कर पाता उसमें मानसिक दोष आ जाते है।

वर्तमान समय में आधुनिक अनुसंधानों से ज्ञात हुआ हैं कि तनाव और अशांति एक विकट समस्या हैं जिसकी उत्पत्ति आवश्यकता की पूर्ति में बाधा उत्पन्न हो जाने से होती हैं और इसका दुष्प्रभाव व्यक्ति के शारीरिक और मानसिक जगत पर पड़ता हैं और व्यक्ति इससे बचना चाहता हैं व्यक्ति अनेक मानसिक अवस्थाओं में विभिन्न प्रकार की अनेक समस्याओं के साथ समायोजन करता हैं तब उसे असफलता का अनुभव होता हैं यह असफलता अथवा भयावह हानिकारक परिस्थिति शारिरिक अथवा मानसिक प्रकार की होती हैं ऐसी अवस्था में व्यक्ति तनाव और

अशान्ति का अनुभव करता है। मानसिक तनाव के कारण व्यक्ति की एकाग्रता की क्षमता कम हो जाती हैं और वह अपने चिन्तन को तार्किक रूप से संगठित नहीं कर पाता हैं चिन्तन में चिन्ता की भूमिका बढ जाती है।

वर्तमान समय में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामने मानसिक समस्यायें होती हें जब वह इन मानसिक समस्याओं का सामना करने में असफलता का अनुभव करता हें तो यह भयावह और हानिकार परिस्थिति मानसिक प्रकार की ही होती हैं ऐसी अवस्था में वह तनाव और अशांति का अनुभव करता है इस अशान्ति और तनाव की अवस्था में विद्यार्थी दबाव चिन्ता, तनाव, अन्तर्द्वन्द्व और किसी भी मानसिक अवस्था में हो सकता है।

विद्यार्थी भविष्य की नींव हैं इसलिए उसका मानसिक रूप स्वस्थ्य बने रहना आवश्यक है।

फ्रेंडसन के शब्दों में– "मानसिक स्वास्थ्य और अधिगम से सफलता का बहुत घनिष्ठ संबंध है" इन शब्दों में यह संकेत निहित हैं कि बालक और शिक्षक दोनों का मानसिक स्वास्थ्य अच्छा होना अनिवार्य हैं इसके अभाव में न तो बालक सफलतापूर्वक शिक्षा ग्रहण कर सकता हैं और न शिक्षक सफलतापूर्वक शिक्षण का कार्य कर सकता है।

इन सभी समस्याओं को ध्यान में रखकर शोधकर्त्री द्वारा इस समस्या का चयन किया गया ताकि यह ज्ञात कर सके कि मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों जैसें विद्यालय सम्बंधी कारक, पारिवारिक कारक, सामाजिक कारक इत्यादि के विषय में जानकारी अर्जन कर सके तथा उनका समाधान कर सकें साथ ही शोधकर्त्री ग्रामीण, शहरी, सरकारी, निजी, विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के

मानसिक स्तर और उनको प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन करना चाहती हैं इस कारण इस समस्या का चयन किया गया।

1.4. समस्या कथनः–

"विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य सम्बंधी समस्याओं एवं सम्बंधित कारकों का विश्लेषणात्मक अध्ययन"

1.5. तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरणः–

मानसिक स्वास्थ्य – मानसिक स्वास्थ्य का अर्थ हैं व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का पूर्ण रूप से व अच्छी तरह तालमेल स्थापित करते हुऐ काम करते रहना है।

1.6. शोध के उद्देश्यः–

(1). विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य सम्बंधी समस्याओं एवं सम्बंधित कारकों का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

(2). सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के छात्र और छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन करना।

(3). निजी विद्यालयों में अध्ययनरत मा. स्तर के छात्र और छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन करना।

(4). निजी व सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन करना।

(5). निजी व सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वालें कारकों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

1.7. शोध की परिकल्पनाएँः–

(1). स्रकारी विद्यालयों में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के छात्र और छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

(2). निजी विद्यालयों में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के छात्र और छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

(3). निजी एवं सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

(4). निजी एवं सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले कारकों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

1.8. शोध विधिः–

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि है।

1.9. परिसीमनः–

(1). भौगोलिक दृष्टि से न्यादर्श के रूप में केवल अलवर जिले की कोटकासिम तहसील को ही लिया जायेगा।

(2). प्रस्तुत शोध में न्यादर्श के रूप में सरकारी व निजी विद्यालयों के माध्यमिक स्तर के केवल 120 छात्र–छात्राओं को ही लिया जायेगा।

(3). प्रस्तुत शोध कार्य केवल माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर ही किया जायेगा।

(4). प्रस्तुत शोध कार्य में 4 विद्यालयों को ही चुना जायेगा।

1.10. न्यादर्शः–

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री द्वारा माध्यमिक स्तर के सरकारी व निजी विद्यालयों में अध्ययनरत 120 विद्यार्थियों को लिया गया हैं।

1.11. शोध में प्रयुक्त उपकरणः–

1. मानसिक स्वास्थ्य परीक्षण सम्बंधी प्रश्नावली (स्वनिर्मित)
2. मानसिक स्वास्थ्य सम्बंधी कारकों की परिसूची (स्वनिर्मित)

1.12. शोध में प्रयुक्त सांख्यिकीः–

1. मध्यमान
2. प्रामाणिक विचलन (S.D.)
3. टी.मान ('T' Test)

द्वितीय अध्याय

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

"किसी भी क्षेत्र का सम्बन्धित इतिहास उस आधार पर शिला के समान है, जिस पर सारा भावी कार्य एकत्रित होता है। यदि हम सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा के द्वारा इस नींव को दृढ़ नहीं कर लेते तो हमारे कार्य प्रभावहीन व महत्वहीन होने की संभावना है अथवा यह पुनरावृत्ति भी हो सकती है।"

.....उब्ल्यू आर बोर्ग

द्वितीय अध्याय

सम्बंधित साहित्य का अध्ययन

2.1. प्रस्तावनाः–

अनुसंधान की प्रक्रिया में सम्बंधित साहित्य का अध्ययन करना, इस उपक्रम का एक वैज्ञानिक एवं महत्वपूर्ण चरण हैं क्योंकि व्यक्ति अपने अतीत से संचित एवं आलेखित ज्ञान के आधार पर नवीन ज्ञान का सृजन करता है।

केवल मानव ही एक ऐसा प्राणी है जो सदियों से एकत्रित किये ज्ञान का लाभ उठा सकता है। व्यवहारिक आधार पर सम्पूर्ण मानव ज्ञान पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं में संचित रहता है। मानव की प्रत्येक पीढी उस संचित ज्ञान को प्राप्त कर, चिन्तन कर परिष्कृत कर अथवा पूर्ण व आंशिक परिवर्तन करके निरन्तर विकसित करने का प्रयास करती रहती है। किसी भी शोध कार्य की सफलता के लिए यह आवश्यक हैं कि शोधार्थी पुस्तकालय का उपयोग करें अपनी समस्या से सम्बंधित जितनी भी यथा सम्भव उपलब्ध पुस्तकें, ग्रंथ, पत्रिकाएँ गतवर्षों में एकत्रित किये गये अनुसंधानों के संतोषप्रद विवरण से अपने को पूर्वपरिचित करें। जिससे यह ज्ञात होता हैं कि समस्या से सम्बंधित किस पथ पर कार्य हो चुका हैं, उसमें शोध कौनसी प्रविधि प्रयुक्त की गई हैं कौनसा पथ समस्या का ऐसा हैं जिसका अभी तक अध्ययन नहीं किया गया है।

2.2. सम्बन्धित साहित्य का अर्थ एवं परिभाषाएँः–

सम्बंधित साहित्य का पुनरावलोकन दो शब्दों से मिलकर बना हैं अनुसंधान विधि में साहित्य शब्द किसी विषय के अनुसंधान के विषम क्षेत्र के ज्ञान की ओर

संकेत करता है। जिसके अन्तर्गत सैद्धान्तिक व्यावहारिक और शोध अध्ययन आते है। "पुनरावलोकन" शब्द का अर्थ, शोध के विशेष क्षेत्र के ज्ञान की व्यवस्था करना एवं ज्ञान को विस्तृत करके यह दिखाया जाता हैं कि उसके द्वारा किया गया अध्ययन इस क्षेत्र में एक योगदान होगा। सम्बंधित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सम्बंधित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोषों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबंधों एवं अभिलेखों आदि से है। जिनके अध्ययन से अध्ययनकर्ता को अपनी समस्याओं के चयन परिकल्पनाओं के निर्माण अध्ययन की रूपरेखा तैयार करना तथा कार्य को आगे बढाने में सहायता मिलती है।

सम्बंधित साहित्य का अध्ययन ही शोधकर्ता को ज्ञान के उस शिखर तक ले जाता हैं, जहाँ पर वह अपने क्षेत्र की नवीन एवं विरोधी उपलब्धियों का परिचय प्राप्त करता है। प्रत्येक पीढी उस ज्ञान को प्राप्त कर उसको निरन्तर आगे की ओर अग्रसर करने का प्रयास करती है। इस प्रकार वह अपने से पहले अनुसन्धानकर्ता से सीखकर बाद वाले के बीच की कडी बनता है।

बेस्ट के अनुसारः– "व्यावहारिक दृष्टि से सारा मानव ज्ञान पुस्तकों एवं पुस्तकालयों से प्राप्त किया जा सकता है। अन्य जीवों के अतिरिक्त जो पीढी में नये सिरे से प्रारम्भ करते हैं, मानव समाज अपने प्राचीन अनुभवों को संग्रहित तथा सुरक्षित रखता है। ज्ञान के अथाह भण्डार में मानव का निरन्तर योगदान सभी क्षेत्रों में उसके विकास का आधार है।"

डब्ल्यू. आर. बोर्ग के अनुसारः– "किसी भी क्षेत्र का साहित्य उस आधारशिला के समान हैं जिस पर सम्पूर्ण भावी कार्य आधारित होता हैं, यदि संबंधित साहित्य का

सर्वेक्षण द्वारा इस नींव को दृढ़ नहीं कर लेते तो हमारे कार्य के प्रभावहीन एवं महत्वहीन होने की सम्भावना हैं अथवा यह पुनरावृत्त भी हो सकता है।"

गुड, वार तथा स्केट्स के अनुसारः– एक कुशल चिकित्सक के लिए यह आवश्यक हैं कि वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधि सम्बंधी आधुनिक खोजों से परिचित होता रहे उसी प्रकार शिक्षा के जिज्ञासु छात्र को अनुसंधान के क्षेत्र से सम्बंधित सुचनाओं एवं खोजो से परिचित होना आवश्यक हैं।

2.3. सम्बंधित साहित्य के सर्वेक्षण के उद्देश्यः–

(1). यह अनुसंधान के लिए सिद्धान्त विचार व्याख्याएँ तथा परिकल्पनाएं प्रदान करता है। जो नयी समस्या के चयन में उपयोगी हो सकते है।

(2). यह अनुसंधान के क्षेत्र में यह जानकारी प्रदान करता हैं कि क्या और कितना हो चुका है।

(3). यह परिकल्पना के लिए साधन प्रदान करता हैं शोधकर्ता प्राप्त अध्ययन के आधार पर शोध परिकल्पनाएँ बना सकता है।

(4). चयनित समस्या के लिए किस विधि तथा प्रक्रिया का प्रयोग उपयुक्त होगा? तथा कौनसी सांख्यिकी का प्रयोग करना होगा? इन सब की जानकारी देता है।

(5). समस्या के प्रभावीकरण, अवधाणाएँ सीमांकन तथा परिकल्पना निर्माण में सहायता करता है।

2.4 सम्बंधित साहित्य की सूचनाओं के स्त्रोतः–

सम्बंधित साहित्य की सूचनाओं के लिए पुस्तकालय तथा उसके अनेक साधनों से परिचित होना आवश्यक है। पुस्तकालय में उपलब्ध किसी भी शोध के क्षेत्र में विद्यमान सूचनाओं के स्त्रोत दो प्रकार के हो सकते थेंः–

1. लिखित
2. संकलित

(1). लिखितः–

लिखित स्त्रोतों में वे सभी पूर्व संकलित सामग्री सम्मिलित हैं जो प्रकाशित अथवा अप्रकाशित रूप से हमें प्राप्त होती है। लिखित सूचना के निम्न स्त्रोत हैं–

1. विद्वानों द्वारा लिखित ग्रन्थ– इन ग्रन्थों से हमें अनुसंधान के लिए उपयुक्त सामग्री मिल सकती है।
2. शिक्षा से संबंधित मासिक एवं पाक्षिक पत्र पत्रिकाऐं लेख प्रतिवेदन आदि।
3. सरकारी समाचार पत्र।
4. बुलेटिन।
5. शोध प्रबंध पीजी एवं पी.एच.डी.

(2). संकलितः–

संकलित स्त्रोतों में अनुसंधानकर्ता प्रत्यक्ष रूप से समस्या से सम्बंधित सामग्री का चयन करता है। अर्थात् इकट्ठा करता हैं तथा दूसरों को सहयोग भी इस विषय में प्राप्त करता हैं।

2.5. शोध अध्ययन से सम्बंधित साहित्यः–

➢ भारत में किया गया शोध अध्ययनः–

(1). एम. राजकुमार (2017)– "रोल ऑफ योगा एण्ड मेडिटेशन इन झजिंग मैंटल हैल्थ, सैल्फ कॉन्सेप्ट एण्ड एचीवमैंट मोटिवेशन अमंग स्कूल स्टूडेंट्स।" Alagappa University, Tamilnadu

उद्देश्यः–

1. योगा और मेडिटेशन थैरेपी का स्कूल लेवल के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य आत्मसम्प्रत्य और अभिप्रेरणा स्तर पर पडने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।

निष्कर्षः–

योगा और मेडिटेशन थैरेपी का स्कूल लेवल के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य आत्मसम्प्रत्यय और अभिप्रेरणा स्तर पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

(2). Kamboj Shilpa, Anjali Malik & Kohli Sarveep (2017), मैन्टल हैल्थ ऑफ परोन्ट विद क्रानिक डिजिट जर्नल ऑफ इण्डिया हेल्थ साइक्लोजी Volume No.-11, P.P.-66-68

उद्देश्यः–

सकारात्मक सोच की लम्बी बीमारी पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।

निष्कर्षः–

सकारात्मक सोच द्वारा लम्बी बीमारी को नियन्त्रित किया जा सकता है।

(3). Verma Kavita (2015)-इन्ट्रक्टिव इफैक्ट ऑफ जैण्डर टाइप ऑफ स्कूल एण्ड मैंटल हैल्थ ऑन सोशियल एडजेस्टमेन्ट ऑफ एडोलैसैट्स Education Review Volume No.-53, PP 76-82

उद्देश्यः–

मानसिक स्वास्थ्य का सामाजिक समायोजन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।

निष्कर्षः–

मानसिक स्वास्थ्य सामाजिक समायोजन को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।

(4). वी. एस. एडविन (2013)– मेंटल हेल्थ स्टेट्स ऑफ टीचर एजुकेटर्स। तमिलनाडु युनिवर्सिटी पी.एचडी

उद्देश्यः–

(i). शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य स्तर को जानना।

(ii). शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर लिंग के प्रभाव को जानना।

निष्कर्षः–

(i). शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य का स्तर उच्च पाया गया।

(ii). शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर लिंग का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

(5). सुमन, (2013) पतंजलि योगाभ्यास का बाल अपराधियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं नैतिक निर्णय पर प्रभाव का अध्ययन। दयालबाग एजुकेशन इंस्टिट्यूट पी. एचडी

उद्देश्यः–

प्रयोगात्मक एवं नियन्त्रित समूह के बाल अपराधियों के मानसिक स्वास्थ्य पर पतंजलि योग के प्रभाव को जानना।

निष्कर्षः–

प्रयोगात्मक एवं नियंत्रित समूह के बाल अपराधियों के मानसिक स्वास्थ्य पर पतंजली योग के प्रभाव का कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

(6). शर्मा, भावना (2012),– "उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर"

उद्देश्यः–

(i). उच्च माध्यमिक स्तर के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन करना।

(ii). उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन करना।

(iii). उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।

निष्कर्षः–

(i). उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

(ii). उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

(iii). उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य पर पारिवारिक वातवरण का प्रभाव पड़ता है।

(7). शर्मा, मंजु (2012)– "इफैक्ट ऑफ म्यूजिक इनरिचमेंट प्रोग्राम आफन अकादमिक एचीवमैंट एडजेस्टमैण्ट एण्ड लेवल ऑफ कॉनच्यूसनस मेंटली चेलेन्जड चिल्ड्रन" दयालबाग एजुकेशन इंस्टिट्यूट पी.एचडी।

उद्देश्यः–

संगीत के वातावरण का मानसिक रूप से विक्षिप्त बालकों के समायोजन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।

निष्कर्षः–

संगीत के वातावरण का मानसिक रूप से विक्षिप्त बालकों के समायोजन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

(8). चौहान चन्दा, (2012)– "उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की दुश्चिन्ता का अध्ययन" जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय लाडनूं– एम.एड

उद्देश्यः–

(i). उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों की छात्राओं और गैर सरकारी विद्यालयों के छात्रों की दुश्चिन्ता में तुलनात्मक अध्ययन करना।

(ii). उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के छात्र और गैर सरकारी विद्यालयों की छात्राओं की दुश्चिन्ता में तुलनात्मक अध्ययन करना।

निष्कर्षः–

(i). उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों की छात्राओं और गैर सरकारी विद्यालय के छात्रों की दुश्चिन्ता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

(ii). उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के छात्र और गैर सरकारी विद्यालयों की छात्राओं कि दुश्चिन्ता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

(9). माथुर दीप्ति (2012), "माध्यमिक स्तर के बालक बालिकाओं के मानसिक थकान का तुलनात्मक अध्ययन, जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय, लाडनूं एम. एड"

उद्देश्यः–

माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण बालक बालिकाओं के मानसिक थकान का तुलनात्मक अध्ययन करना।

निष्कर्षः–

माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण बालक बालिकाओं के मानसिक थकान में सार्थक अन्तर नहीं पाया।

(10).गुप्ता एवं यादव (2011)–"एडजस्टमेंट एण्ड वेल्यू ऑफ अडोल्सेन्ट मेल एण्ड फीमेल स्टूडेन्ट, इन्दिरा गांधी विश्वविद्यालय, मीरपुर रेवाड़ी"

उद्देश्यः–

(i). किशोरों के समायोजन तथा मूल्य रीति का अध्ययन।

(ii). बालक बालिकाओं के मध्य मूल्य तथा समायोजन अन्तर को ज्ञात करना।

निष्कर्षः–

(i). किशोरों के समायोजन तथा मूल्य रीति में सार्थक अन्तर पाया गया।

(ii). बालक बालिकाओं के मध्य मूल्य तथा समायोजन में सार्थन अन्तर नहीं पाया गया।

(11).भोजक, गिरिराज (2011), "माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की दुश्चिंता, व्यक्तित्व एवं बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन।"

उद्देश्यः–

(i). माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अन्तर्गत अध्ययनरत छात्रों की दुश्चिंता, व्यक्तित्व एवं बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

(ii). माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अन्तर्गत अध्ययनरत छात्राओं की दुश्चिंता, व्यक्तित्व एवं बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

(iii). माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अन्तर्गत अध्ययनरत विद्यार्थियों की दुश्चिंता व्यक्तित्व एवं बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

निष्कर्षः–

(i). आंकडों की व्याख्या के आधार पर कहा जा सकता हैं कि माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अन्तर्गत अध्ययनरत छात्रों की दुश्चिंता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

(ii). माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अन्तर्गत विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की दुश्चिंता में आंशिक अन्तर पाया गया है।

(iii). माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के छात्रों के व्यक्तित्व में "सांवेगिक अस्थिरता सांवेगिक स्थिरता शील गुण" के सन्दर्भ में कोई सार्थक अन्तर नहीं बनता है।

(12).पार्थ अम्मा, जी.एच. एवं शरअम्मा. आर. (2010) "एंग्जायटी लेवल एण्ड लेवल ऑफ सेल्फ कोन्फिडेन्स एण्ड डेअर रिलेशन विद एकेडमिक अचिवमेन्ट"

उद्देश्यः–

(i). कक्षा 9 में अध्ययनरत विद्यार्थियों के दुश्चिंता स्तर और शैक्षिक उपलब्धि स्तर में सम्बंध का अध्ययन।

(ii). छात्र और छात्राओं के दुश्चिंता स्तर में अन्तर का अध्ययन करना।

निष्कर्षः–

(i). दुश्चिंता स्तर और उपलब्धि स्तर में ऋणात्मक सह–संबंध है।

(ii). छात्रों की अपेक्षा छात्राओं का दुश्चिंता स्तर उच्च है।

(13). गोयल, रेखा (2010) सवाईमाधोपुर जिले के किशोरावस्था के विद्यार्थियों की दुश्चिंता स्तर का अध्ययन, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर – एम.एड.

उद्देश्यः–

(i). किशोरावस्था के छात्र–छात्राओं की दुश्चिन्ता स्तर का अध्ययन करना।

(ii). किशोरावस्था के शहरी छात्र व ग्रामीण छात्रों की दुश्चिन्ता स्तर का अध्ययन करना।

निष्कर्षः–

(i). किशोरावस्था के छात्रों की अपेक्षा छात्राओं का दुश्चिंता स्तर उच्च है।

(ii). किशोरावस्था के शहरी छात्र व ग्रामीण छात्रों की दुश्चिंता स्तर में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

(14). माली, राजकुमार (2010)– "ध्यान एवं प्रणायाम का बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन।"

उद्देश्यः–

ध्यान एवं प्राणायाम क्रिया में भाग लेने वाले एवं न लेने वाले बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर पडने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।

निष्कर्षः–

ध्यान एवं प्राणायाम क्रिया में भाग लेने वाले एवं न लेने वाले बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

(15).गुप्ता रंजना (2009), "महाविद्यालय छात्राओं की मनःस्तापी क्रियाओं का मानसिक स्वास्थ्य व समायोजन पर प्रेक्षाध्यान, योग क्रियाओं का प्रभान।" राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर–एम.एड.।

उद्देश्यः–

(i). महाविद्यालय छात्राओं की मनःस्तापी क्रियाएँ जैसे–अवसाद, बाध्यता व मानसिक स्वास्थ्य व समायोजन का अध्ययन करना।

(ii). मनःस्तापी क्रियाओं मानसिक स्वास्थ्य व समायोजन पर शारीरिक व्यायाम व योग क्रियाओं व नेति क्रिया व दैनिक चर्या का प्रभाव देखना।

निष्कर्षः–

(i). पूर्व प्रायोगिक स्तर पर तीन समूहों की छात्राओं का मानसिक स्वास्थ्य मनःस्तापी यथा अवसाद मनोग्रस्त बाध्यता, उन्माद व समायोजन मानसिक स्वास्थ्य व संवेगात्मक के स्तर की स्थितियाँ प्रायः समान स्थिति में है।

(ii). योग क्रियाओं के नियमित करने से इन छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य व समायोजन प्रभाव का सार्थक रूप से संवर्धन हुआ है।

(16).चौधरी, हारदेन्द्र एण्ड कौर, तेज प्रीत (2008), "फैमिली एन्वायरमेन्ट ऑफ अरबन एडोलसेन्स" इण्डियन जर्नल्स ऑफ साइकोमेन्ट्री एण्ड एजुकेशन, पटना Volume No. 39 (1) PP-75

उद्देश्यः–

विषय वस्तु का सम्बंधित परिवार में उच्च स्तर के अभिव्यक्ति, स्वीकृति, स्वातन्त्रय, सक्रिय, पुनर्सृजनात्मक और नियन्त्रण के विषय में जानकारी प्राप्त करना।

निष्कर्षः–

कोई भी विषय वस्तु सम्बंधित परिवार में उच्च स्तर के अभिव्यक्ति स्वीकृति स्वातन्त्रय सक्रिय पुनर्सृजनात्मक और नियन्त्रण नहीं रखते है।

(17). कविया, आर. (2008) किशोर विद्यार्थियों की दुश्चिंता समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि प्रभाव का अध्ययन,

उद्देश्यः–

किशोर विद्यार्थियों की दुश्चिंता समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

निष्कर्षः–

किशोर विद्यार्थियों की दुश्चिंता समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

(18).गुप्ता वंदना (2004), "साइकॉलॉजिकल प्रोफाइल्स ऑफ नेशनल वुमन फुटबॉल प्लेयर्स, पी.एचडी. शारीरिक शिक्षा, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय,इन्दौर"

उद्देश्यः–

(i). चयनित मनोवैज्ञानिक चरों के सम्बंध में वरिष्ठ राष्ट्रीय कनिष्ठ राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय महिला फुटबॉल खिलाड़ियों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

(ii). अन्तर्राष्ट्रीय, सीनियर राष्ट्रीय एवं जूनियर राष्ट्रीय महिला फुटबॉल खिलाड़ियों के सामूहिक प्रोफाइल स्केच करना।

निष्कर्षः–

(i). सीनियर राष्ट्रीय महिला फुटबॉल खिलाड़ियों के मध्य दुश्चिंता मध्यम आत्मविश्वास न्यून उपलब्धि अभिप्रेरण तथा मानसिक कठोरता का औसत स्तर पाया जाता है।

(ii). जूनियर राष्ट्री महिला फुटबॉल खिलाड़ियों में मध्यम दुश्चिंता मध्यम आत्मविश्वास, न्यून उपलब्धि अभिप्रेरण तथा मानसिक कठोरता का निम्न स्तर पाया जाता है।

(iii). अन्तर्राष्ट्रीय महिला फुटबॉल खिलाड़ियों का दुश्चिंता स्तर जूनियर राष्ट्रीय महिला फुटबॉल खिलाडियों की तुलना में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

(19).जुगनू खेमलानी (2000), "विज्ञान के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण व अध्ययन आदतों का शैक्षिक तथा आकांक्षा स्तर पर प्रभाव का अध्ययन" इण्डियन एजुकेशन एक्सट्रेक्ट एन.सी.ई.आर.टी. वॉल्यूम 5 पृष्ठ संख्या–12–13

उद्देश्यः–

विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण व अध्ययन आदतों का शैक्षिक तथा आकांक्षा स्तर पर प्रभाव का अध्ययन करना।

निष्कर्षः–

विद्यार्थियों में पारिवारिक वातावरण एवं अध्ययन आदतों का आकांक्षा स्तर की अपेक्षा शैक्षिक उपलब्धि पर अधिक प्रभाव पड़ता है।

- **विदेशों में किया गया शोध अध्ययनः–**

(20).डोल्टा, मीना स्वैचनी (2005)– "इम्पैक्ट ऑफ होम एनवायरमेंट ऑफ द स्कोलोस्टिक एचीवमेंट ऑफ चिल्ड्रन" meenawatchhot@mail.com

उद्देश्यः–

(i). पारिवारिक वातावरण का छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के साथ सम्बंधो का अध्ययन।

(ii). उच्च स्तर के पारिवारिक वातावरण का शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह सम्बंध ज्ञात करना।

निष्कर्षः–

(i). पारिवारिक वातावरण का छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के साथ सकारात्मक संबंध है।

(ii). उच्च स्तर के पारिवारिक वातावरण का उच्च स्तर की शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह संबंध है।

(21). होपका, डेरेक (2005),–"द इफैक्टस ऑन परफोरमैंस आई. क्यू. सोर्स एग्जाइटी स्ट्रेस एण्ड कोपिंग" वॉ 18 मार्च 2005, पृष्ठ संख्या –17–35

उद्देश्यः–

दुश्चिंता का बुद्धिलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

निष्कर्षः–

टैस्टिंग दुश्चिन्ता सामान्य दुश्चिंता मनोवैज्ञानिक अनुक्रिया और ऑनलाइन दुःश्चिन्ता में से केवल टेस्टिंग दुःश्चिंता एवं हार्ट रेट रिएक्टिविटी (धनात्मक) का प्रभाव बुद्धिलब्धि पर होता है।

(22). फोग. एस. (2005)– "द फेक्ट ऑफ फैमिली स्ट्रक्चर सोशियों इकॉनोमिक स्टेट्स ऑन स्टुडेन्ट्स एकेडमिक एचीवमेन्ट" एम.बी.बुच फिफ्थ सर्वे इन रिसर्च एज्यूकेशन, एन.सी.ई.आर.टी. वॉल्यूम– द्वितीय पृष्ठ संख्या 967

उद्देश्यः–

(i). विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक संरचना के पडने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।

(ii). विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सामाजिक आर्थिक प्रभावों का अध्ययन करना।

(iii). विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर माता–पिता के व्यवहार के प्रभावों का अध्ययन।

निष्कर्षः–

(i). विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक संरचना सामाजिक आर्थिक स्थिति तथा माता–पिता के व्यवहार का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

(23). सुसार मेरी एल्डर्ड (1999),–"द इफैक्टस ऑफ क्राइसिल इंटरवेंशन टीम ट्रेनिंग ऑन कॉपिंग स्किल्स एंग्जाइटी एण्ड रेडीनेस फॉर इंसीकेन्टस ऑफ स्कूल वाइलेन्स"

उद्देश्यः–

विषम परिस्थिति तथा सम परिस्थिति वाले सदस्यों के समूह के बीच दुश्चिंता में अन्तर का निर्धारण करना।

निष्कर्षः–

विषय परिस्थिति तथा सम परिस्थिति वाले सदस्यों के समूह के बीच दुश्चिन्ता में सार्थक अन्तर पाया गया।

(24). बोल्फ, रिचर्ड एम. (1983), "अचीवमेन्ट इन्वेस्टीगेशन ऑफ एडोलसन्स अचीवमेन्ट पैटर्न।"

उद्देश्यः–

(i). विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण तथा उनके द्वारा प्राप्तांको के मध्य संबंध ज्ञात करना।

(ii). विद्यार्थियों का पारिवारिक वातावरण, उनकी बुद्धि बौद्धिक क्षमता और अकादमिक उपलब्धि को प्रभावित करना।

निष्कर्षः–

(i). विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण तथा उनके द्वारा प्राप्ताकों के मध्य घनिष्ठ संबंध पाया गया।

(ii). विद्यार्थियों का पारिवारिक वातावरण उनकी बुद्धि बौद्धिक क्षमता और अकादमिक उपलब्धि को प्रभावित करती है।

तृतीय अध्याय

शोध विधि न्यादर्श एवं उपकरण

"जीवन के दूसरे कार्यो की तरह अनुसंधान कार्यो में शोधकर्त्री को आयोजन करना जरूरी है क्योंकि पूर्व विचाच-विमर्श एवं पूर्ण तैयारी के बिना जो अनुसंधान होते हैं, वे महत्व के बिन्दु पर पहुंचने की अपेक्षा दिशाविहीन हो जाते हैं और उसमें समय व मानसिक शक्ति का व्यय होता है।"

.....के.जी. देसाई

तृतीय अध्याय

शोध विधि न्यादर्श एवं उपकरण

3.1 प्रस्तावनाः–

सम्बन्धित साहित्य के विश्लेषण के पश्चात् अनुसंधान कार्य में किसी भी शोध समस्या के समाधान के लिए और उसके उद्देश्य की प्राप्ति के लिए अनुसंधान विधि, प्रविधि एवं उपकरण सम्पूर्ण अनुसंधान कार्य में आधारशिला रूपी नीवं हैं अतः अनुसंधान कार्य के लिए उपयुक्त अध्ययन विधि, उपकरण एवं सांख्यिकी का चयन करना महत्वपूर्ण है। एक अनुसंधानकर्ता अपने अनुसंधान को प्रारम्भ करने से पूर्व उसके सभी पक्षों के संबंध में पहले ही निर्णय लेकर नियोजन करता हैं और इसी नियोजन के आधार पर वह अनुसंधान कार्य में आने वाली कठिनाईयों का सामना आसानी से कर पाता है। अतः यह अति आवश्यक हैं कि शोध कार्य शुरू करने से पूर्व उपकरण व विधियों का नियोजन व निर्माण किया जायें तभी अनुसंधान कार्य प्रभावी बन सकेगा। अनुसंधान कर्ता का कर्तव्य हैं कि वह अपने शोध द्वारा सही निष्कर्ष प्रस्तुत करे इस कर्तव्य का पालन करने के लिए कार्य करने से पहले योजना बनाना आवश्यक है। कोई भी सफलता उसकी योजना योग्यता एवं कार्यविधि पर निर्भर करती है। बिना योजना बनाएं शोध कार्य करना उस पथिक के समान होगा जिसे यह पता नहीं कि उसे कहा जाना है। इससे वह आसानी से भटक सकता हैं एक शोधकर्ता के पास समय व धन की कमी होते हुए भी शोध कर्या में विश्वसनीयता एवं यथार्थता लाना तभी सम्भव होगा जबकि उसकी पूर्व में ही योजना बनाई जाये।

3.2 अनुसंधान का अर्थः–

अनुसंधान को अग्रेंजी में रिसर्च कहते हैं तथा सर्च का अर्थ 'खोजना' हैं अर्थात् किसी तथ्य को पूर्ण मनोयोग से खोजना।

अनुसंधान का अर्थ पूर्णतया तथ्यों, ज्ञान एवं घटनाओं की खोज करना ही नहीं हैं अपितु नवीनतम तथ्यों के सन्दर्भ में स्वीकृत निष्कर्षो के परिशोधन हेतु आलोचनात्मक ढंग से विस्तारपूर्वक परिक्षण एवं अन्वेषण करना भी उसके अन्तर्गत आता है। इसलिए इसे रि (पुनः) सर्च (खोज) की संज्ञा दी गई है।

प्रस्तुत अध्ययन में यह बताया गया हैं कि अध्ययन में किस शोध विधि का चयन किया गया है तथा न्यादर्श के चयन में कौनसी विधि का चयन व उपयोग किया गया है। तथा शोध में कौन–कौनसे उपकरण प्रयुक्त किये गये हैं उनका विवरण तथा किन सांख्यिकी विधियों का चयन किया गया है। अनुसंधान एक वैज्ञानिक खोज हैं जो क्रमबद्ध प्रयासो द्वारा ईमानदारी के साथ बुद्धिपूर्वक पूर्णरूपेण की जाती है।

3.3 अनुसंधान की परिभाषाः–

(1). **पी. एम कुक के अनुसारः–** "अनुसंधान किसी समस्या के प्रति ईमानदारी एवं व्यापक रूप में समझदारी के साथ की गई खोज है जिसमें तथ्यों तथा अर्थो की जानकारी की जाती है। अनुसंधान की उपलब्धि तथा निष्कर्ष प्रमाणिक तथा पुष्टियोग्य होते हैं जिससे ज्ञान में वृद्धि होती है।"

(2). **रेडमैन और गौरी के अनुसारः–** "नवीन ज्ञान की प्राप्ति हेतु व्यवस्थित प्रयत्न को हम अनुसंधान कहते है। तत्व चर अथवा परिस्थितियाँ हो सकती हैं उनकी

विश्लेषण द्वारा जानकारी प्राप्त की जाती है। उसके बाद विश्लेषण द्वारा ही उनमें से कुछ अत्यन्त महत्वपूर्ण चरों का चुनाव करके उनका समस्या समाधान के रूप अथवा प्रश्नों के सम्भावित उत्तरों के रूप में परिक्षण किया जाता है।"

(3). **स्पार तथा स्वेसन के अनुसारः–** "कोई भी विद्ववतापूर्वक अनुसंधान की सत्य के लिए तथ्यों के लिए निश्चितताओं के लिए अन्वेषण है।"

3.4 परिकल्पनाः–

3.4.1. परिकल्पना का अर्थः–

जब किसी व्यक्ति के सामने कोई कठिनाई उत्पन्न हो जाती हैं तो वह उसके निवारण के उपाय भी सोचने लगता है। फलस्वरूप जो उपाय उसके मस्तिष्क में आते हैं वे ही समस्या के सम्भावित समाधान होते है। ये सामान्य अनुमान ही परिकल्पनाएं कहलाती है।

3.4.2. परिकल्पना का शाब्दिक अर्थः–

परिकल्पना को अंग्रजी में Hypothesis कहते हैं जो दो शब्दों से मिलकर बना हैं हाइपो (Hypo)+ थीसिस (Thesis)। हाइपो का अर्थ हैं सम्भावित या जिसकी पुष्टि की जाये तथा थीसिस का अर्थ हैं समस्या के समाधान का कथन इस प्रकार हाइपोथिसिस का शाब्दिक अर्थ हुआ वह सम्भावित कथन जो समस्या का समाधान प्रस्तुत करता है। अर्थात् परिकल्पना उस समाधान को प्रस्तुत करती हैं जिसकी पुष्टि प्रदत्तों के आधार पर की जाये।

3.4.3. परिकल्पना की परिभाषाएँः–

1. **टाउनसैण्ड (1953)–** ''समस्या के समाधान हेतु एक प्रस्तावित हल के रूप में परिकल्पना को परिभाषित किया जा सकता है।''

2. **करलिंगर–** ''परिकल्पना वह कल्पनात्मक कथन हैं जो दो या दो से अधिक चरों के संबंध में होता है।''

3. **मैक्गुइगन (1969)–** ''परिकल्पना एक परीक्षण योग्य कथन हैं जो दो या दो से अधिक चरों के शक्तिशाली संबंध के संबंध में होता है।''

4. **मूले के अनुसारः–** परिकल्पना एक अभिक्रम अथवा तर्क वाक्य हैं जिसकी स्थिरता का परीक्षण उसकी अनुरूपता उपयोग, अनुभवजन्य प्रभाव व पूर्ण ज्ञान के आधार पर करती है।

3.4.4. परिकल्पना के उद्देश्यः–

1. परिकल्पना शोध के लिए दिशा प्रदान करती है। उपयोगी प्रदत्तों के संकलन में सहायता प्रदान करती है।

2. परिकल्पना अध्ययनकर्ता को संवेदनशील बनाती हैं जिससे वह अनावश्यक परिस्थितियों तथा प्रदत्तों के संकलन से बच जाता है।

3. परिकल्पना द्वारा शोधकर्ता की समस्या को सही रूप में समझने में सहायता मिलती हैं तथा समस्या का रूप स्पष्ट हो जाता है।

4. परिकल्पना द्वारा शोध के निष्कर्षो के प्रतिपादन में सहायता मिलती है।

3.4.5. परिकल्पनाओं के प्रकारः–

परिकल्पनायें रूप तथा संदर्भ के आधार पर कई प्रकार की होती है। परिकल्पना का रूप उसके कार्य के आधार पर निर्धारित किया जाता हैं साधारणतया परिकल्पनायें निम्न प्रकार की होती हैं–

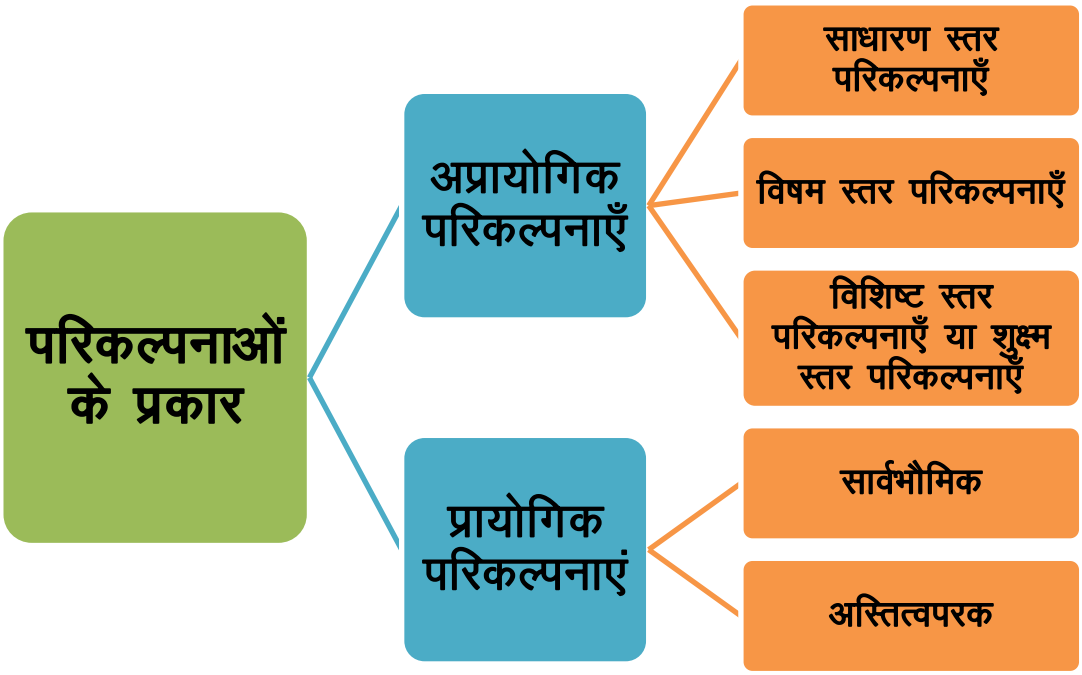

कथन के आधार पर भी प्रायोगिक कल्पना दो प्रकार की होती हैं–

कथन के आधार पर परिकल्पना के प्रकार–

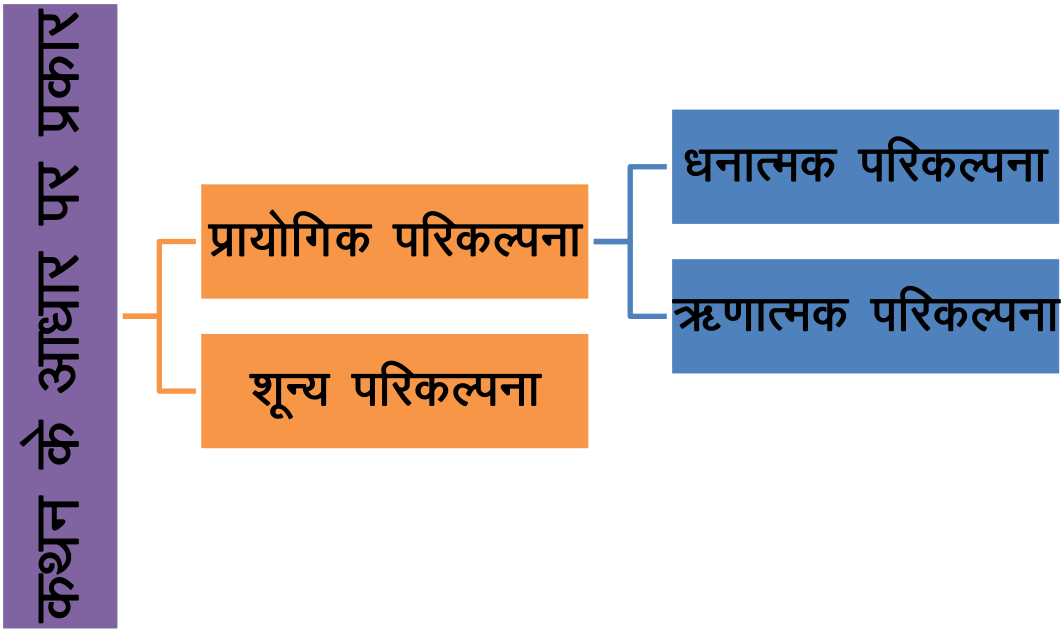

3.4.6. परिकल्पना का महत्त्वः–

शोध कार्य में परिकल्पना का विशिष्ट स्थान है। शोध की समस्त प्रक्रियाएँ परिकल्पनाओं के चारों ओर केन्द्रित होती हैं। परिकल्पना के महत्त्व को निम्न बिन्दुओं द्वारा समझ सकते है–

1. परिकल्पना अनुसंधान की दिशा को स्पष्ट करती हैं फलस्वरूप शोध कर्ता को इधर–उधर नहीं भटकना पड़ता।

2. अनुसंधान परिकल्पनाओं द्वारा यह भी स्पष्ट हो जाता हैं कि किस प्रकार की अनुसंधान विधि अनुसंधान आकल्प का प्रयोग किया जायेगा शोध सामग्री किन व्यक्तियों किन स्थानों पर तथा किस प्रकार की मनोवैज्ञानिक परीक्षाओं के माध्यम से एकत्र की जायेगी। इस दृष्टिकोण से परिकल्पनाओं का अनुसंधान में अत्यधिक महत्त्व है।

3. परिकल्पनाएँ उस प्रतिपेक्ष्य को भी प्रस्तुत करती हैं जिसमें समस्या के समाधान स्वरूप निष्कर्षो की स्थापना करनी होती है। समस्या की वस्तुनिष्ठ रूप में व्याख्या करने में परिकल्पनाएँ बहुत सहायक होती है।

4. परिकल्पना ज्ञान के सृजन का अन्तिम बिन्दु नहीं होती। एक परिकल्पना का परीक्षण दूसरी को जन्म देती है। दूसरी का परीक्षण तीसरी को प्रत्येक अनुसंधान की परिकल्पनाओं का परीक्षण आगामी परीक्षण पेक्षी परिकल्पनाओं की ओर संकेत करता है।

3.4.7. शोध में प्रयुक्त परिकल्पनाएँः–

1. सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के छात्र और छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य में काई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

2. निजी विद्यालयों में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के छात्र और छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

3. निजी एवं सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

4. निजी एवं सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले कारकों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

3.5 जनसंख्याः–

अनुसंधान में समष्टि तथा जनसंख्या समान अर्थ रखते हैं सामान्यतः वस्तुओं व्यक्तियों या घटनाओं के उस साकल्य को समष्टि कहा जाता है जिसके बारे में उसके कुछ व्यक्तियों या घटनाओं अथवा पदार्थो को प्रतिदर्श के रूप में लेकर तथ्य संग्रह किया जाता है। और सम्पूर्ण समूह के बारे में अनुमान लगाया जाता है।

3.6. न्यादर्शः–

किसी भी शोध में सबसे महत्वपूर्ण न्यादर्श होता है। क्योंकि किसी भी अनुसंधानकर्ता के लिए यह सम्भव नहीं हैं कि वह पूरे जनसंख्या के समग्र के सभी व्यक्तियों को अपनी खोज का विषय बना सकें। इसलिए जनसंख्या में से कुछ व्यक्तियों का चयन कर लिया जाता हैं जो कि समग्र का प्रतिनिधित्व करें और जिन पर किये गये अध्ययन के आधार पर समग्र के लिए चयनित व्यक्तियों के ऐसे समूह को न्यादर्श कहते है। समय की मितव्ययता होने से अधिकतम अनुसंधानों में न्यादर्श लेकर ही अध्ययन करते है। इसमें इकाईयों की समग्र से काफी कम होती हैं जिससे विवेचन काफी सरल होता है।

3.6.1. न्यादर्श की परिभाषाएंः–

(1). **बोगार्डस (1954)**– ''पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार एक समूह में से निश्चित प्रतिशत की इकाईयों का चुनाव ही प्रतिचयन कहलाता है।''

(2). **करलिंगर (1973)–** ''किसी जनसंख्या या समष्टि से उसके प्रतिनिधिस्वरूप एक अंश चुन लेने को प्रतिचयन कहते है।''

(3). **गुड एवं हैट–** ''एक न्यादर्श जैसा कि नाम से स्पष्ट हैं कि सम्पूर्ण समूह का एक निम्नतम प्रतिनिधित्व है।''

(4). **पी.वी.यंग–** ''एक सांख्यिकीय निदर्शन सम्पूर्ण समूह योग का एक लघुकृत आकार का चित्र है। जिससे कि निदर्शन लिया जाता है।''

3.6.2. न्यादर्श के लाभः–

न्यादर्श के लाभ निम्नलिखित हैं–

(1). न्यादर्श के द्वारा सर्वेक्षण की आर्थिक लागत कम हो जाती है।

(2). न्यादर्श के द्वारा वे प्रदत्त भी सम्भव हो पाते है। जो समग्र के अध्ययन से सम्भव नहीं हो पाते।

(3). प्रदत्तों व प्रतिक्रियाओं का सम्पादन व जाँच सरल हो जाती है।

(4). न्यादर्श में व्यक्तियों की संख्या कम होने से परीक्षणों के प्रशासन में सुविधा रहती है।

(5). न्यादर्श के आधार पर एकत्रित आंकड़ो का विश्लेषण तथा चित्रात्मक प्रदर्शन सम्भव व सरल होता हैं तथा निष्कर्षो की विवेचना सम्भावना सिद्धान्त के आधार पर की जा सकती है।

3.6.3. न्यादर्श की सीमाएँः–

न्यादर्श के लाभ होते हुए भी कुछ सीमाएं है जो इस प्रकार हैंः–

(1). न्यादर्श पद्धति से कभी–कभी न्यादर्श त्रुटि का पूर्व कथन सम्भव नहीं होता है।

(2). कही–कहीं समग्र जनसंख्या का अध्ययन आवश्यक हो जाता हैं वहाँ न्यादर्श से काम नहीं चलता है।

(3). न्यादर्श में पक्षपात की संभावना बनी रहती है।

(4). जनसंख्या के विषमजातीय होने पर न्यादर्श द्वारा अध्ययन पद्धति दोषपूर्ण हो जाती है।

(5). जनसंख्या का स्वरूप सीमित होने पर न्यादर्श द्वारा अध्ययन पद्धति दोषपूर्ण हो जाती है।

3.6.4. न्यादर्श चयन की विधियाँः–

सम्भाव्य न्यादर्श	असम्भाव्य न्यादर्श
यादृच्छिक न्यादर्श	अंश न्यादर्श
स्तरीकृत न्यादर्श	सोद्देश्य न्यादर्श
गुच्छ न्यादर्श	आकस्मिक न्यादर्श
द्विष न्यादर्श	सम्पूर्ण न्यादर्श
क्रमबद्ध न्यादर्श	निर्णित न्यादर्श

3.6.5. प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त न्यादर्श की विधिः–

प्रस्तुत शोध समस्या के लिए न्यादर्श के चुनाव हेतु यादृच्छिक विधि का प्रयोग किया गया है। इस विधि के प्रयोग द्वारा प्रत्येक इकाई के प्रतिदर्श आने की सूची बना लेते हैं फिर इकाईयों को बिना किसी पक्षपात के चुन लिया जाता हैं ये सम्पूर्ण इकाईयाँ जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करती है।

3.6.6. शोध में प्रयुक्त न्यादर्शः–

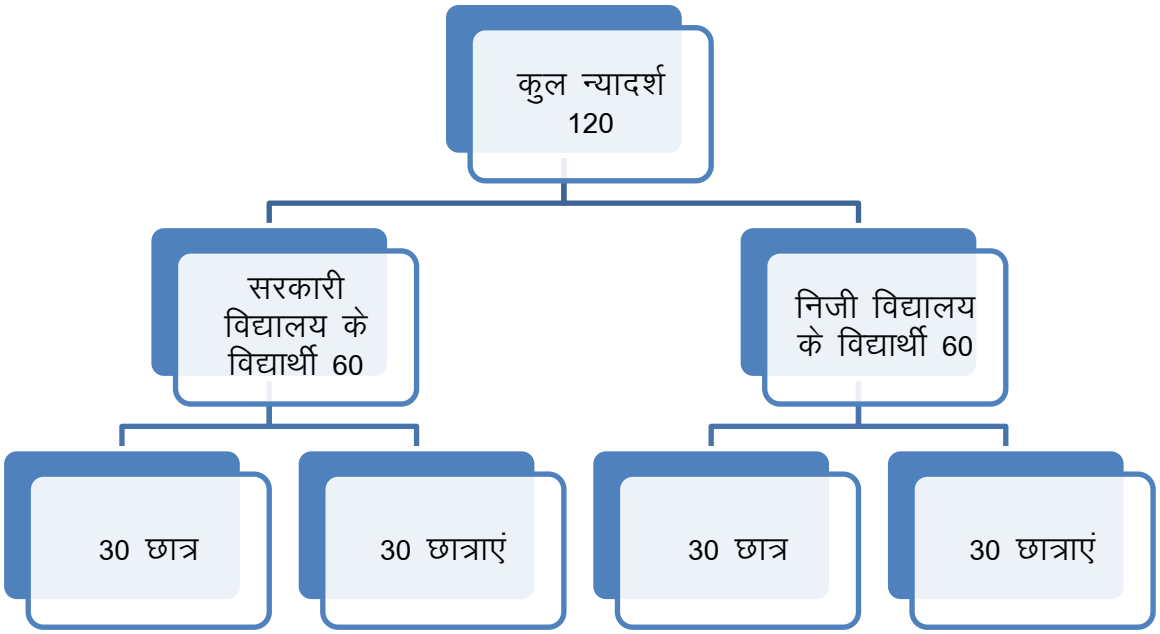

शोधकर्त्री द्वारा शोध के उद्देश्यों व परिकल्पनाओं के आधार पर अलवर जिले की कोटकासिम तहसील के माध्यमिक स्तर के सरकारी व निजी विद्यालयों में अध्ययनरत 120 विद्यार्थियों को लिया गया है।

माध्यमिक स्तर के सरकारी व निजी विद्यालयों के छात्र व छात्राएँः–

3.7. अनुसंधान की विधियाँः–

अनुसंधानकर्ता अनुसंधान कार्य के लिए जिस विधि का प्रयोग करता हैं वह समस्या की प्रकृति पर निर्भर करता है। यदि समस्या की प्रकृति वर्णनात्मक हैं तो उसे वर्णनात्मक कहेंगे और यदि समस्या की प्रकृति ऐतिहासिक हैं तो उसे ऐतिहासिक अनुसंधान कहेंगे और यदि समस्या की प्रकृति प्रयोगात्मक हैं तो उसे प्रयोगात्मक अनुसंधान कहेंगें।

जार्ज जे. मूले ने अनुसंधान को तीन मौलिक रूपों में विभाजित किया हैं जिसके आधार पर शोध की तीन विधियाँ हैं।

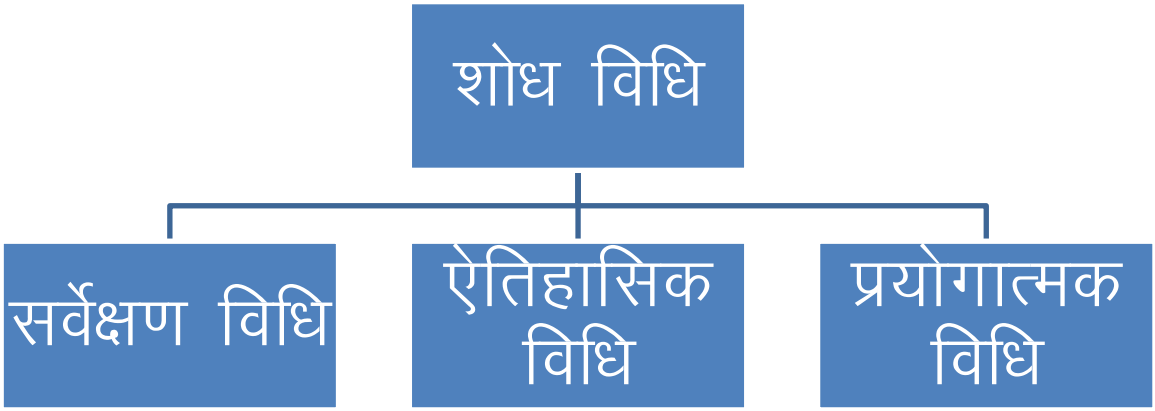

3.8. अध्ययन में प्रयुक्त विधिः–

अनुसंधान में अनेक विधि साक्षात्कार, अवलोकन विधि, प्रयोगात्मक आदि विधियों का प्रयोग किया जाता है। शोधकर्ता किसी विधि का चयन करेगा यह शोध समस्या पर निर्भर करता है। यदि शोधकर्ता अपनी विधि की व्याख्या स्पष्ट रूप से नहीं कर सकता हैं तो परिणामों को अत्यधिक एवं सामान्य बने रहने की सम्भावना बनी रहती है। क्योंकि शोधकर्ता शोध विधि के द्वारा ही आंकडों का संकलन करता है। अतः समस्या के आंकडें तैयार करने हेतु तथा शोध कार्य को वैज्ञानिकता प्रदान करने हेतु अनुसंधानकर्ता आवश्यक रूप से कुछ विधियों प्रविधियों एवं उपकरणों के लिए शैक्षिक अनुसंधान की विधियों में सर्वेक्षण विधि का चयन किया है। शोधकर्त्री ने अपने अध्ययन की प्रकृति को देखते हुए सर्वेक्षण विधि का चयन किया हैं ताकि सही परिणाम प्राप्त हो सके।

3.8.1. सर्वेक्षण विधि का अर्थः–

सर्वेक्षण विधि को अंग्रजी में Survey Method कहा जाता है। Survey दो शब्दों से मिलकर बना हैं Sur+vey। Sur का अर्थ हैं over तथा ver का अर्थ To

Look होता है। अर्थात् ऊपर की ओर देखना। इस प्रकार सर्वे का अर्थ अवलोकन या अन्वेषण से होता है। जिसका उद्देश्य एक क्षेत्र को किसी एक स्थिति अथवा उसे प्रचलन के संबंध में अर्थात् सूचना प्रदान करना होता हैं सर्वेक्षण विधि उन वर्तमान तथ्यों का उद्‌घाटन करती हैं जो समस्या में निहित है। इस विधि से तथ्यों का निष्कर्ष निकालने व उनकी व्याख्या करने के लिए केवल अपेक्षित प्रश्नों का उत्तर ही प्राप्त होता हैं बल्कि समस्या से संबंधित तथ्यों की वर्तमान स्थिति भी स्पष्ट हो जाती है।

3.8.2. सर्वेक्षण की परिभाषाएँः–

(1). **मैकमिलन के अनुसारः–** "सर्वेक्षण एक संगठन की प्रक्रिया हैं इसका उस समय प्रयोग किया जाता हैं जब अनुसंधान प्राथमिक रूप में कार्यकरण संबंध से सम्बंधित नहीं होता।"

(2). **ट्रेवर के अनुसार–** "सर्वेक्षण विधि वर्तमान कार्यो की प्रकृति को निश्चित करने की विधि है।"

(3). **एम.एल. विटनी के अनुसार–** "सर्वेक्षण आधुनिक सामाजिक विज्ञान की शब्दावली के अनुसार एक प्रकार का व्यवस्थित प्रयास है। जिसमें कि वर्तमान सामाजिक संस्थानों के स्तर समूह तथा क्षेत्रों के संबंध में विवेचन व्याख्या आदि से सम्बंधित बातों का उल्लेख किया जाता है।"

उपरोक्त परिभाषाओं से यह निष्कर्ष निकलता हैं कि सर्वेक्षण विधि से सर्वेक्षण द्वारा सूचनाएं एवं गणनाओं को तर्कपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। इसीलिए यह विधि बहुत उपयोगी एंव महत्वपूर्ण है।

3.8.3. सर्वेक्षण के उद्देश्यः–

(1). सूचनाओं का संकलन करना।

(2). किसी विशिष्ट कारक का पता लगाना।

(3). किसी व्यवहार कारक का पता लगाना।

(4). दो चरों के बीच पारस्परिक सम्बंध का पता लगाना।

3.8.4. सर्वेक्षण विधि के सोपानः–

सर्वेक्षण को सफल बनाने के लिए उसके आयोजन के प्रमुख सोपान निम्नलिखित हैं–

1. समस्या की व्याख्या
2. उद्देश्य का निर्धारण
3. अध्ययन क्षेत्र परिभाषित करना
4. उपकरण एवं प्रविधियों का चुनाव
5. प्रतिदर्श का चयन
6. समग्र सूची का निर्माण
7. दन्त संकलन एवं विश्लेषण

3.8.5. सर्वेक्षण विधि की सीमाएंः–

सर्वेक्षण विधि के लाभ के साथ–साथ कुछ सीमाएँ भी हैं जो निम्न प्रकार हैं–

(1). सर्वेक्षण प्रायः असम्बद्ध एवं बिखरे होते हैं अतः इन्हे पूर्ण रूप से संकलित करके किसी सिद्धान्त का निर्माण नहीं किया जा सकता है।

(2). सर्वेक्षण विधि से समाज के एक अंश का अवलोकन हो पाता है। इससे समस्त सत्य को समझना मुश्किल है।

(3). सर्वेक्षण विधि से ऐसी सूचनाएं प्राप्त नहीं होती जिनसे तथ्यों का गहराई से अध्ययन हो सके।

(4). सर्वेक्षण में अभ्यर्थियों के गलत या सामाजिक रूप से मान्य उत्तर देने की संभावना होती है।

(5). सर्वेक्षण विधि में शोधकर्ता को अधिक सतर्क, प्रशिक्षित तथा शोध क्षेत्र का जानकार होना चाहिए।

यद्यपि सर्वेक्षण विधि में अनेक त्रुटियां व कमियां हैं फिर भी अनुसंधान के क्षेत्र में इसका अपना अलग महत्व है। अनेकानेक तात्कालिक समस्याओं पर उचित सूचना तथा तथ्य इसी के माध्यम से प्राप्त किये जा सकते हैं विभिन्न उपकल्पनाओं का सत्यापन तथा सिद्धान्तों का परीक्षण भी इस विधि द्वारा सम्भव है।

3.8.6. सर्वेक्षण विधि के लाभः–

सर्वेक्षण विधि के लाभ निम्नलिखित हैः–

(1). सर्वेक्षण अध्ययन वर्तमान स्थितियों स्तरों तथा समस्याओं का अध्ययन करने के लिए उपयुक्त है।

(2). सर्वेक्षण अध्ययन भावी विकास के क्रम या प्रवृत्तियों का पूर्वानुमान देता है। यह वर्तमान तथा भविष्य की आवश्यकताओं की ओर प्रभावी रूप से ध्यान आकर्षित करने की क्षमता रखते है।

(3). इन अध्ययनों के लिए वांछित उपकरण सरल तथा उपयोगी होते है। इनका प्रयोग व प्रशासन सरल होता है।

(4). आवश्यक उपकरणों के माध्यम से संग्रहित प्रदत्तों का विश्लेषण तथा व्याख्या सरल होती हैं इनसे सहज ही निष्कर्ष निकाले जा सकते है।

(5). इस प्रकार के अध्ययनों के लिए उपकरणों का विकास व निर्माण करना भी अधिक कठिन नहीं है।

3.9. उपकरणः–

किसी भी समस्या के अध्ययन हेतु नवीन एवं अज्ञात तथ्यों का संकलन करने में सहायक साधनों को शोध उपकरण कहते है। अनुसंधान हेतु अनेक उपकरणों का प्रयोग किया जाता है उपकरण के अर्थ को स्पष्ट करते हुए सुखिया एवं मल्होत्रा ने लिखा हैं–

"किसी समस्या के अध्ययन हेतु नवीन एंव अज्ञात दन्त संकलन के लिए अनेक विधियों का प्रयोग किया जाता है। प्रत्येक प्रकार के अनुसंधान के लिए नवीन दन्त संकलित करने हेतु कई यंत्रों की आवश्यकता होती हैं, इन्ही यन्त्रों को उपकरण कहते हैं।" विभिन्न उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए भिन्न–भिन्न प्रकार के उपकरण प्रस्तुत किए जाते है। अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अनुसंधानकर्ता इन उपकरणों का प्रयोग कर सकता है।

3.9.1. उपकरण के प्रकारः–

उपकरण दो प्रकार के होते हैंः–

1. मानकीकृत उपकरण
2. अमानकीकृत उपकरण

1. **मानकीकृत उपकरणः–** मानकीकृत उपकरण उपेक्षाकृत अधिक मान्य व वैज्ञानिक होते है। ये वे साधन हैं जिन्हें परीक्षण द्वारा मनोवैज्ञानिक शिक्षाशास्त्रीयों, अनुसंधान संस्थाओं आदि के द्वारा अनेक अन्वेषणों की सहायता से बडे समूह पर प्रशासित

किया जाता हैं और इनकी वैधता विश्वसनीयता मानकों को ज्ञात कर लिया जाता है। इनकी प्रशासन प्रक्रिया सुनिश्चित होती है।

2. **अमानकीकृत या स्वनिर्मित उपकरणः–** अमानकीकृत उपकरणों का निर्माण शोधकर्ता द्वारा समस्या के अनुसार स्वयं अपने अनुभव संबंधित साहित्य के अध्ययन संबंधित उद्देश्यों तथा अध्यापकों के सहयोग के आधार पर करते है। इन उपकरणों के निर्माण के बाद वह उसकी विश्वसनीयता, वैधता ज्ञात करता है। तत्पश्चात् उन्हें प्रयोग में लाता है।

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री ने स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग किया है।

3.9.2. शोध में प्रयुक्त उपकरणः– प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए शोधकर्त्री द्वारा स्वनिर्मित परीक्षण बनाया गया है। जिसमें माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य और माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन किया गया है।

3.9.3. प्रश्नावलीः– किसी भी अनुसंधान में आंकड़ो के संकलन करने में यह महत्वपूर्ण उपकरण है। इसमें अनेक प्रश्नों का समूह होता है। प्रश्नावली प्रश्नों की वह सूची हैं जो अध्ययन समस्या के संबंध में बनायी जाती हैं और जिसकी सहायता से अध्ययन इकाईयों से तथ्यों का संकलन करके अध्ययन समस्या का अध्ययन पूर्ण किया जाता है।

3.9.3.1. प्रश्नावली की परिभाषाएँः–

(1). **गुड तथा हॉट (1952) के अनुसार–** "सामान्य रूप से प्रश्नावली का अर्थ प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने की उस प्रणाली से हैं जिसमें एक पत्रक, प्रारूप या प्रपत्र का उपयोग किया जाता हैं जिसे उत्तरदाता स्वयं भरता है।"

(2). **सिन–पाओयंग (1953) के अनुसार–** "अपने सरलतम रूप में प्रश्नावली प्रश्नों की वह अनुसूची हैं जिसे कि अनुसूचित या सर्वेक्षत प्रतिदर्श के रूप में चुने हुए व्यक्तियों के पास डाक द्वारा भेजा जाता हैं। इसकी सहायता से बडे और विस्तृत लोगों के समूहों से शीघ्र और सरलता से सूचना एकत्रित की जाती है।"

(3). **वान डेलेन के अनुसार–** "प्रश्नावली एक उपकरण हैं जो शिक्षा क्षेत्र में कार्य करने वालों के द्वारा वर्तमान परिस्थितियों व क्रियाओं के बारे में तथा अभिवृत्ति व मत को जानने के लिए व्यापक रूप में प्रयोग किया जाता है।"

3.9.3.2. प्रश्नावली विधि के लाभ/आवश्यकताः–

3.9.3.3. प्रश्नावली की सीमाएँः–

प्रश्नावली के लाभ होते हुए भी कुछ सीमाएं हैं जो इस प्रकार हैः–

(1). शोधकर्ता का पक्षपातपूर्ण दृष्टिकोण।

(2). निर्देशन के लिए अनुपयोगी।

(3). गहन व विस्तृत अध्ययन के लिए अनुपयोगी।

(4). प्रत्येक स्तर के अनुरूप प्रश्नों की रचना असम्भव।

(5). विभिन्न व्यवहारिक कठिनाईयां।

3.9.3.4. अनुसूचीः–

अनुसूची एक ऐसा उपकरण हैं जिसका उपयोग अनुसंधान से संबंधित समस्याओं के अध्ययन में बहुत अधिक हुआ है। अनुसूची और प्रश्नावली एक दूसरे से बहुत कुछ मिलते–जुलते है। सर्वेक्षण अनुसंधान में आँकड़ों के संकलन में अनुसूची बहुत महत्त्वपूर्ण है। अनुसूची प्रश्नों की वह सूची होती हैं जिसकी सहायता से अनुसंधान समस्या से संबंधित तथ्यों का संकलन किया जाता है।

3.9.3.5. अनुसूची की परिभाषाएँः–

(1). गुड और हॉट (1952)– "अनुसूची उन प्रश्नों के एक समूह का नाम हैं जिसकों साक्षात्कर्ता द्वारा अन्य व्यक्तियों के आमने–सामने की स्थिति में पूछा और भरा जाता है।"

(2). करलिंगर 1978– "अनुसूची एक ऐसी अनुसंधान यन्त्र होता हैं जिसका उपयोग व्यक्तिक साक्षात्कार द्वारा सर्वेक्षण में सूचना संग्रह के लिए किया जाता है।"

3.9.3.6. अनुसूची की विशेषताएंः–

अनुसूची की निम्नलिखित विशेषताएं हैंः–

(1). अनुसूची एक प्रपत्र या शोध यन्त्र हैं जिसकी सहायता से अनुसंधान समस्या का अध्ययन किया जाता है।

(2). अनुसूची एक ऐसा यन्त्र हैं जिसके द्वारा शिक्षित और अशिक्षित दोनों ही प्रकार के उत्तरदाताओं से तथ्य संग्रह किया जाता है।

(3). अनुसूची के प्रश्नों की भाषा सरल स्पष्ट और बोधगम्य होनी चाहिए।

(4). अनुसूची में अनेक प्रश्न क्रमबद्ध ढंग से होते है। यह सभी प्रश्न अनुसंधान समस्या के विभिन्न पक्षों से संबंधित होते है।

3.9.4. प्रशासनः–

प्रस्तुत शोध मानसिक स्वास्थ्य परीक्षण का एक प्रकार है। परीक्षण से संबंधित निर्देश परीक्षण को परीक्षण से पूर्व सभी निर्देशों को सविस्तार से समझा देना चाहिए जो कि परीक्षण में दिये गये पूरे परीक्षण को एक ही बार में पूरा करना चाहिए।

3.9.5. अंकन–

"मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले कारकों की मापनी" (अनुसूची) में प्रत्येक आयाम से सम्बंधित 8–8 प्रश्न हैं तथा कुल 24 प्रश्न हैं प्रत्येक प्रश्न का 5 अंक निर्धारित हैं। ऋणात्मक प्रश्न में पूर्णतः असहमत, अनिश्चित, निश्चित, असहमत, सहमत के लिए क्रमशः 1, 2, 3, 3, 5 तथा सकारात्मक प्रश्न में क्रमशः 5, 4, 3, 2, 1 अंक निर्धारित किये हैं और मानसिक स्वास्थ्य (प्रश्नावली) में तनाव, भय, चिन्ता,

क्रोध, निराशा, ईर्ष्या, दुविधा से सम्बंधित कुल 20 प्रश्न हैं प्रत्येक प्रश्न का 5 अंक हैं प्रत्येक प्रश्न के 5 रेटिंग स्केल हैं।

ऋणात्मक प्रश्न में पूर्णतः असहमत, अनिश्चित, निश्चित, असहमत, सहमत के लिए क्रमशः 1, 2, 3, 3, 5 तथा सकारात्मक प्रश्न में क्रमशः 5, 4, 3, 2, 1 अंक निर्धारित किये है।

मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले कारकों की मापनी (अनुसूची) में कुल 24 प्रश्नों में से 8 प्रश्न ऋणात्मक तथा 16 प्रश्न सकारात्मक हैं तथा मानसिक स्वास्थ्य मापनी (प्रश्नावली) में 20 में से 3 प्रश्न ऋणात्मक तथा 17 प्रश्न सकारात्मक है।

3.9.6. प्रविधियाँः—

प्रविधि से तात्पर्य खास तरीके से सूचनाएँ प्राप्त करने से है। शोधकर्ता में विशेष योग्यता होने पर ही पूर्ण एवं सार्थक सूचनाएँ एकत्रित कर सकता हैं अथवा नहीं शोधकत्री ने अपने अध्ययन में सांख्यिकी प्रविधियों को चुना है।

3.9.7. उपकरण का विवरण एवं प्रशासनः—

शोधकर्त्री द्वारा स्वनिर्मित ''मानसिक स्वास्थ्य मापनी (प्रश्नावली)'' तथा ''मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले कारकों की मापनी (अनुसूची)'' का प्रयोग किया गया है।

3.9.8. परीक्षण विवरणः—

प्रस्तुत शोध कार्य में उपकरण स्वनिर्मित हैं इस उपकरण के माध्यम से माध्यमिक स्तर के सरकारी व निजी विद्यालयों में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य तथा मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले

कारकों का अध्ययन किया गया है। इस परीक्षण में मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित मापनी में 7 आयाम बनाये गये हैं जिनमें कुल प्रश्नों की संख्या 20 है। तथा मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले कारकों की मापनी में 3 आयामों में 8–8 प्रश्न रखे गये हैं तथा कुल प्रश्नों की संख्या 24 है।

इन आयामों को इस प्रकार बताया गया हैं–

मानसिक स्वास्थ्य मापनी (प्रश्नावली) **अंक–100**

आयाम	**प्रश्नों का क्रमांक**	**कुल प्रश्न**
तनाव	1, 2, 3, 4, 5, 11, 14, 18	8
क्रोध	6, 7, 13	3
ईर्ष्या	8	1
निराशा	9, 19, 20	3
भय	10, 12	2
दुविधा	15, 16	2
चिन्ता	17	1
कुल		**20 प्रश्न**

प्रत्येक प्रश्न के लिए 5 अंक निर्धारित है।

मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले कारकों की मापनी (अनुसूची)

कुल अंक – 150

आयाम	**प्रश्नों का क्रमांक**	**कुल प्रश्न**
पारिवारिक कारक	1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8	8
विद्यालयी कारक	9, 10, 11, 12, 13, 14, 15, 16	8
सामाजिक कारक	17, 18, 19, 20, 21, 22, 23, 24	8
कुल		**24 प्रश्न**

प्रत्येक प्रश्न के लिए 5 अंक निर्धारित है।

3.10. अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकीः–

किसी भी सामाजिक घटना का यथा तथ्य अध्ययन करने के लिए सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया जाता है। इसके संबंध में आंकड़े एकत्रित किये जाते हैं उनका वर्गीकरण व सारणीयन करके उन्हें सरल व्यवस्थित एवं बोधगम्य बनाने का प्रयत्न किया जाता हैं ताकि उससे निष्कर्ष निकाला जा सके।

3.10.1. सांख्यिकी का अर्थः–

सांख्यिकी से तात्पर्य संमकों के संग्रहण प्रस्तुतीकरण, विश्लेषण तथा निर्वचन (निष्कर्ष) से हैं।

3.10.2. सांख्यिकी की परिभाषाः–

1. **प्रो. बाउले के अनुसारः–** "सांख्यिकी एक ऐसा शास्त्र हैं जो सामाजिक जीवन रचना की क्रियाओं का उसकी समस्त प्रवृत्तियों में अध्ययन करता है।"
2. **विलियम किंग के अनुसारः–** "सांख्यिकी संग्रहित तथ्यों के विश्लेषण अथवा अनुमान के संकलन द्वारा प्रदत्त सामूहिक या सामाजिक घटनाओं के अध्ययन करने का ढंग हैं।"

3.10.3. प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त सांख्यिकीः–

1. मध्यमानः– मध्यमान प्राप्ताकों का केन्द्रिवर्ती मान होता हैं जो अन्य सभी बातों का प्रतिनिधित्व करता हैं। तथा पूरे समूह की विशेषताओं को बतलाता है।

सूत्रः– $\bar{X} = \frac{\sum X}{N}$

संकेताक्षर–

$\bar{X}$ = मध्यमान

$\sum X$= पदों का योग

N= पदों की संख्या

3.2. प्रामाणिक विचलन ज्ञात करने का सूत्रः–

$$S.D. = \sqrt{\frac{\sum d^2}{N}}$$

संकेताक्षरः–

S.D. = मानक विचलन

$\sum d^2$= मध्यमान से प्राप्त विचलनों के वर्गो का योग

N= पदों की संख्या

(3). 'T' (टी) मान ज्ञात करने का सूत्रः–

$$T = \sqrt[M1-M2]{\frac{(\sigma 1)^2}{N1} + \frac{(\sigma 2)^2}{N2}}$$

M_1= प्रथम समूह का विचलन

M_2= द्वितीय समूह का विचलन

N_1= प्रथम समूह की संख्या

N_2= द्वितीय समूह की संख्या

σ_1= प्रथम समूह का प्रामाणित विचलन

σ_2= द्वितीय समूह का प्रमाणित विचलन

चतुर्थ अध्याय

प्रदत्तों का वर्गीकरण, विश्लेषण एवं व्याख्या

"क्रमबद्ध विश्लेषण का कार्य ठोस बौद्धिक भवन के विचारों के एक संगठन का निर्माण करना है जो कि एकत्रित तथ्यों को उनके उचित स्थान तथा सम्बन्धों में प्रस्तावित करने में सहायक होगा ताकि सामान्य निष्कर्षों को निकाला जा सके।"

.....पी.वी. यंग

चतुर्थ अध्याय

प्रदत्तों का वर्गीकरण, विश्लेषण एवं व्याख्या

4.1 भूमिका :–

प्रस्तुत अध्याय में संग्रहित प्रदत्तों का प्रस्तुतीकरण तथा विश्लेषण के उद्देश्यों एवं परिकल्पनाओं के संदर्भ में किया गया है। प्रस्तुत लघुशोध प्रबंधन अध्ययन का उद्देश्य विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं एवं सम्बन्धित कारकों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है।

इस अध्ययन हेतु मानसिक स्वास्थ्य मापनी (स्वनिर्मित) और मानसिक स्वास्थ्य सम्बन्धी प्रस्तुत की परिसूची (स्वनिर्मित) का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत लघु शोध अध्ययन हेतु 120 माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का चयन किया गया है जो सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों से सम्बन्द्ध थे। जिसमें से सरकारी विद्यालयों के 30 छात्र तथा 30 छात्राएँ तथा निजी विद्यालयों के 30 छात्र तथा 30 छात्राओं का चयन किया गया है।

अनुसंधान में संकलित तथ्यों को वैज्ञानिक ढंग से एक सारणी के अन्तर्गत प्रदर्शित करना ही सारणीयन है। सारणीयन में अंको से प्राप्त होने वाली सूचनाएं स्पष्ट होती है। समस्या की व्याख्या उचित व स्पष्ट होती है तथा आंकड़ों से यथोचित निष्कर्ष निकाले जा सकते है। यहां तक कि इसके द्वारा गुणात्मक रूप में प्रस्तुत करने की एक प्रणाली है। यह संकलित तथ्यों को बोधगम्य व व्यवस्थित बनाती है।

4.2 सारणीयनः–

समकों के वर्गीकरण के पश्चात् उन्हें सही रूप में समझने के लिए समकों की सारणी बनायी जाती है। इससे अध्ययन में सुगमता बाती है।

4.3 सारणीयन का अर्थ व परिभाषाः–

वर्गीकरण के पश्चात् सांख्यिकी सामग्री को सारणियों के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इस प्रकार वर्गीकरण सारणीयन का आधार है। जैसा वर्गीकरण होता है। उसी के अनुरूप सारणीयन भी करना पड़ता है। यदि वर्गीकरण बहुमुखी तथा जटिल है तो सारणी वैसी होगी। सारणीयन द्वारा एकत्रित सामग्री को सरल, संक्षिप्त तथा सुबोध बनाया जाता है।

1. **एल्हंस के अनुसारः–**

   "विस्तृत अर्थ में सारणीयन तथ्यों की स्तम्भों तथा पंक्तियों में क्रमबद्ध रूप में व्यवस्थित करता है।"

2. **सपट के अनुसारः–**

   "एक सांख्यिकी सारणी में संबंधित तथ्यों का उदग्र रवानों तथा समतल पंक्तियों में किया गया वर्गीकरण है"

3. **कॉनर के अनुसारः–**

   "सारणीयन किसी विचाराधीन समस्य को स्पष्ट करने के उद्धेश्य से किया जाने वाला सांख्यिकीय का क्रमबद्ध एवं सुव्यवस्थित प्रस्तुतीकरण है"

4.4 सारणीयन के उद्देश्यः–

1. तथ्यों को संक्षिप्त रूप प्रदान करना।
2. तथ्यों को तुलनीय बनाना।
3. तथ्यों को स्पष्ट तथा बोधगम्य बनाना।
4. सांख्यिकी विवेचना में सहायक।
5. विशेषताओं का प्रदर्शन करना।

4.5 सारणीयन के गुणः–

1. **आकर्षकताः–**

एक सारणी के आकर्षक होने के लिए उसके खानों का समानुपातिक होना, सांख्यिकी के लिखने का ढंग, स्वच्छता तथा लेख की सुन्दरता आदि आवश्यक तत्व है।

2. **समुचित प्रकारः–**

एक स्तरीय सारणी का आकासर समुचित होना चाहिए। आकार न बड़ा न अधिक छोटा होना चाहिए।

3. **स्पष्टता तथा सरलताः–**

एक उत्तम सारणी का स्पष्ट तथा सरल होना परम आवश्यक है। जिससे समकों को तुरन्त खोज सके।

4. **तुलना की सुविधाएंः–**

एक उच्च स्तर की सारणी में तथ्यों को इन प्रकार व्यवस्थित रूप से प्रर्दशित किया जाना चाहिए।

4.6 सारणीयन की सीमाएंः–

1. सारणियों में मात्र समंक होते है उनका विवरण नहीं होता है। अतः उन्हीं तथ्यों से सांख्यिकीय विवेचन नहीं किया जा सकता है।
2. सारणियों को समझने के लिए अंकों का उच्च ज्ञान होना आवश्यक है। इसलिए साधारण ज्ञान रखने वालों के लिए सारणी के अंको के मेल को समझना बहुत कठिन है।

अतः प्रत्येक परिकल्परना को ध्यान में रखते हुए विभिन्न तथ्यों को सारणीबद्ध किया है। तत्पश्चात् उसकी व्याख्या एवं विश्लेषण किया गया है।

परिकल्पना–1

सरकारी विद्यालयों में अध्ययरत माध्यमिक स्तर के छात्र औ छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका संख्या–4.1

क्र.सं.		संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टीमान	सार्थकता स्तर व मान
1.	छात्र	30	62.63	12.41	1.57	सार्थक अन्तर नहीं
2.	छात्रा	30	57.5	12.87		0.05 पर मान=2.00 0.01 पर मान=2.66

df = (N1 + N2 - 2)

df = (30 + 30 - 2) = 58

विश्लेषण एवं व्याख्या :–

सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के छात्र और छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य संबंधी मध्यमान का आरेख निरूपण।

तालिका संख्या 4.1 से स्पष्ट होता है कि सरकारी विद्यालयों में अध्ययरत माध्यमिक स्तर के छात्रों का मध्यमान 62.63 व मानक प्रमाणिक विचलन 12.41 है तथा सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर की छात्राओं का मध्यमान 57. 5 व प्रमाणित विचलन 12.87 है और t का प्राप्त मान 1.57 तालिका मान के दोनो सार्थकता स्तर से कम है अर्थात् 1.57> 2.00 or 1.5<2.66 अपेक्षित मान कम होने से परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। निष्कर्षतः परिकल्पना संख्या 1 सरकारी विद्यालयों में अध्ययरत माध्यमिक स्तर के छात्र और छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है, क्योंकि सरकारी विद्यालयों में अध्ययरत छात्र और

छात्राओं के तनाव क्रोध, ईर्ष्या, निराशा, भय, दुविधा, चिंता इत्यादि लक्षण समान स्तर के पाये गये और परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

सन् 2011–12 में एम.एड. छात्रा भावना शर्मा द्वारा भी (राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर) सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत उ.मा. स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन किया गया जो 0.05 तथा 0.01 स्तर पर सार्थक नहीं था।

आरेख संख्या 4.1

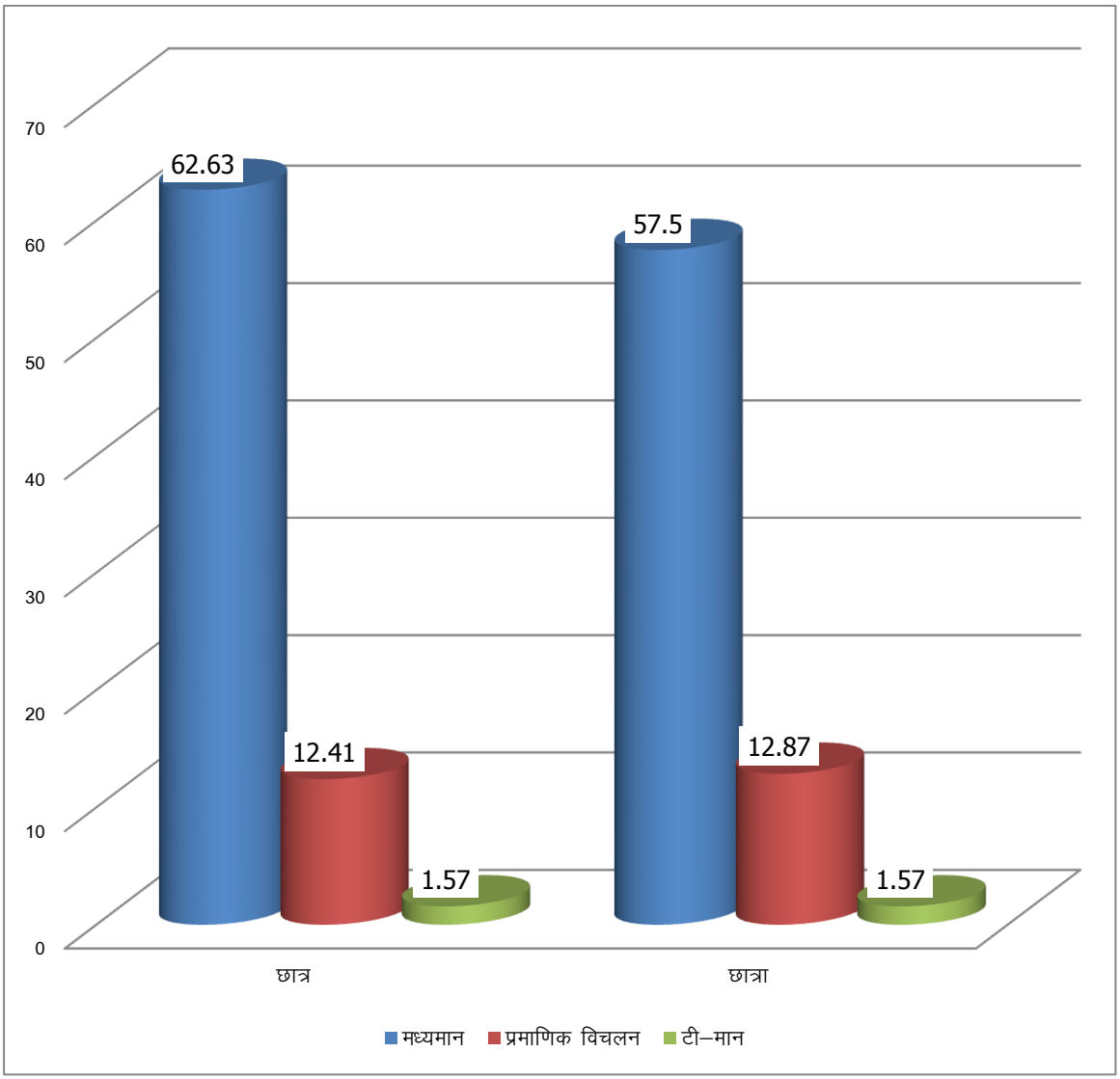

परिकल्पना–2

निजी विद्यालयों में अध्ययरत माध्यमिक स्तर के छात्र औ छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका संख्या–4.2

क्र.सं.		संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टीमान	सार्थकता स्तर व मान
1.	छात्र	30	67.16	9.58	1.04	सार्थक अन्तर नहीं 0.05 पर मान=2.00
2.	छात्रा	30	70	11.47		0.01 पर मान=2.66

df = (N1 + N2 - 2)

df = (30 + 30 - 2) = 58

विश्लेषण एवं व्याख्या :–

निजी विद्यालयों में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के छात्र और छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य संबंधी मध्यमान का आरेख निरूपण।

तालिका संख्या 4.2 से स्पष्ट होता है कि निजी विद्यालयों में अध्ययरत माध्यमिक स्तर के छात्रों का मध्यमान 67.16 व मानक प्रमाणिक विचलन 9.58 है तथा निजी विद्यालयों में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर की छात्राओं का मध्यमान 70 व प्रमाणिक विचलन 11.47 है और t का प्राप्त मान 1.04 तालिका मान के दोनो स्तर से कम है अर्थात् 1.04<2.00 or 1.04<2.66 है। अपेक्षित मान कम होने के कारण परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्षतः परिकल्पना संख्या 2 निजी विद्यालयों में अध्ययरत माध्यमिक स्तर के छात्र और छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया है। परिकल्पना स्वीकृत की जाती है, क्योंकि निजी विद्यालयों में अध्ययरत छात्र और

छात्राओं के तनाव क्रोध, ईर्ष्या, निराशा, भय, दुविधा, चिंता इत्यादि लक्षण समान स्तर के पाये गये।

आरेख संख्या 4.2

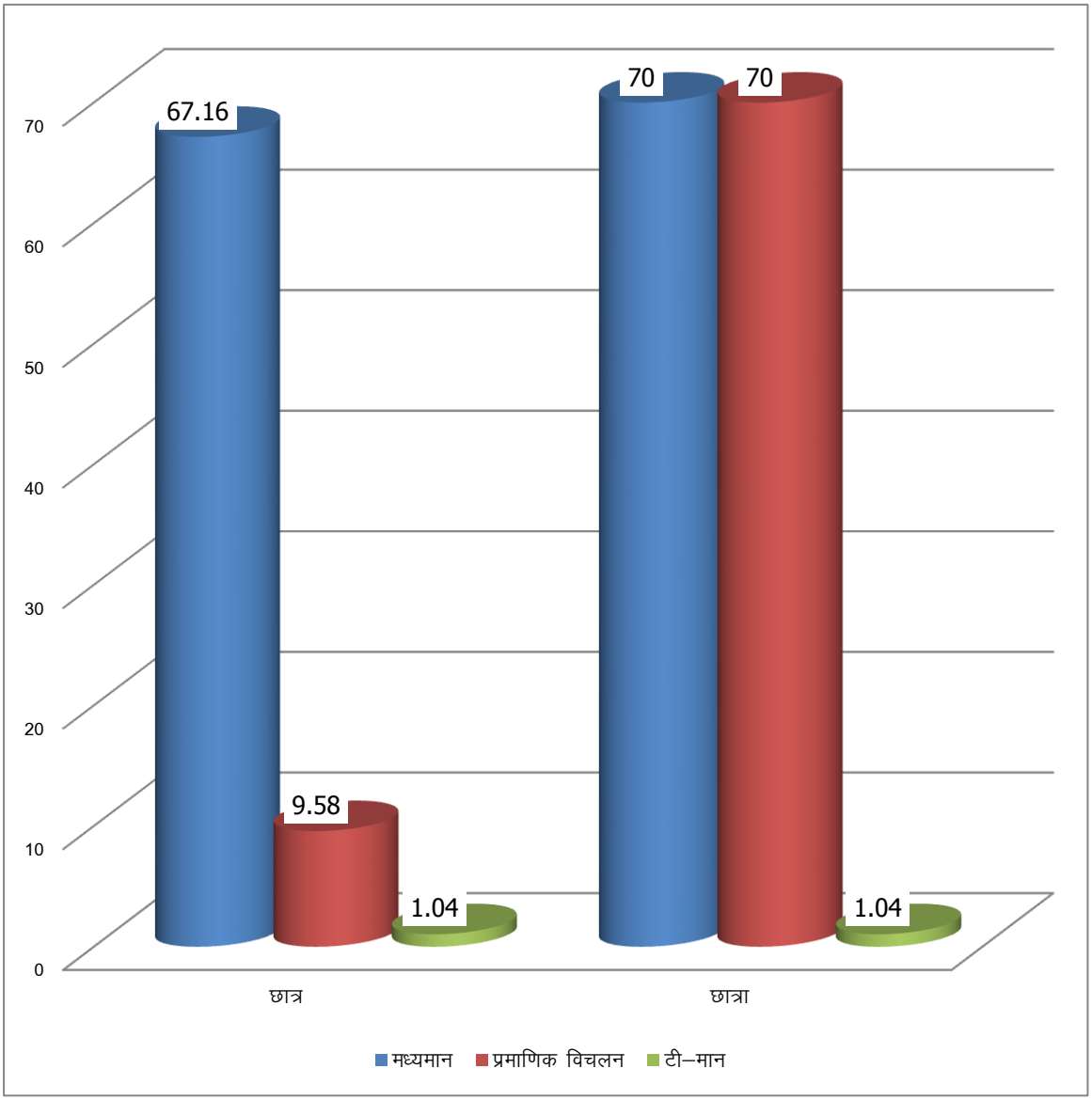

परिकल्पना–3

निजी एवं सरकारी विद्यालयों में अध्ययरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका संख्या–4.3

क्र.सं.		संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टीमान	सार्थकता स्तर व मान
1.	निजी विद्यालयों के विद्यार्थी	60	68.58	10.67	3.49	अन्तर पाया गया 0.05 पर मान=0.98 0.01 पर मान=2.62
2.	सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थी	60	60.06	15.72		

df = (N1 + N2 - 2)

df = (60 + 60 - 2) = 118

विश्लेषण एवं व्याख्या :–

निजी एवं सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य संबंधी मध्यमान का आरेख निरूपण।

तालिका संख्या 4.3 से स्पष्ट होता है कि निजी विद्यालयों में अध्ययरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का मध्यमान 68.58 व मानक प्रमाणिक विचलन 10.67 है तथा सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का मध्यमान 60.06 व प्रमाणिक विचलन 15.72 है और t का प्राप्त मान 3.49 तालिका मान है अर्थात् 3.49>1.98 or 3.49<2.62 है अपेक्षित मान अधिक होने के कारण परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्षतः परिकल्पना संख्या 3 निजी एवं सरकारी विद्यालयों में अध्ययरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया है। परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है, क्योंकि सरकारी विद्यालयों में अध्ययरत विद्यार्थियों में मानसिक तनाव अधिक पाया गया तथा निराशा, भय, दुविधा, चिंता इत्यादि लक्षणों की मात्रा भी अधिक पायी गई।

आरेख संख्या 4.3

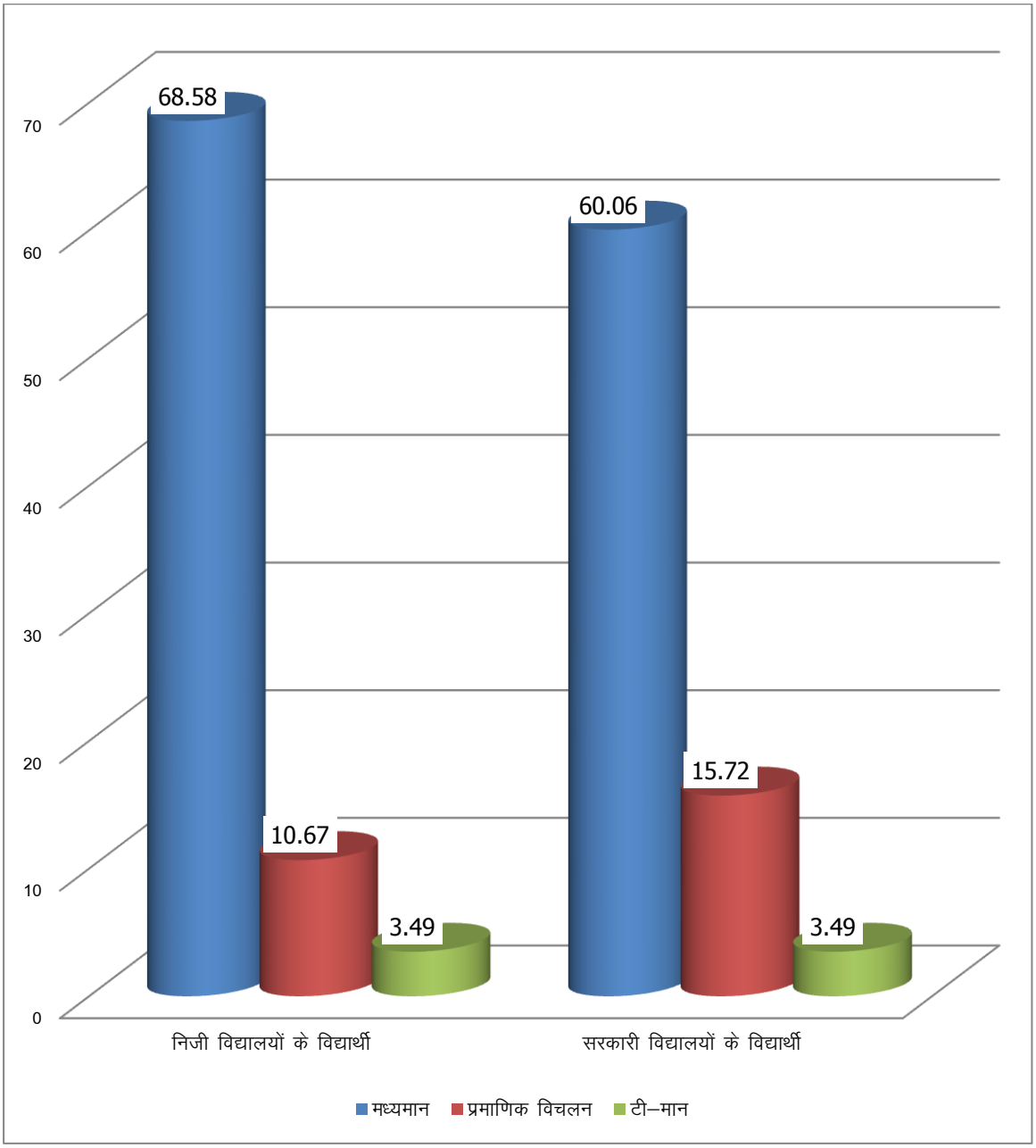

परिकल्पना–4

निजी एवं सरकारी विद्यालयों में अध्ययरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले कारकों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका संख्या–4.4

क्र.सं.		संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी मान	सार्थकता स्तर व मान
1.	निजी विद्यालयों के विद्यार्थी	60	79.61	12.86	4.126	अन्तर पाया गया 0.05 पर मान=1.98 0.01 पर मान=2.62
2.	सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थी	60	71.48	8.28		

df = (N1 + N2 - 2)

df = (60 + 60 - 2) = 118

विश्लेषण एवं व्याख्या :–

निजी एवं सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले कारकों संबंधी मध्यमान का आरेख निरूपण।

तालिका संख्या 4.4 से स्पष्ट होता है कि निजी विद्यालयों में अध्ययरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का मध्यमान 79.61 व मानक प्रमाणिक विचलन 12.86 है तथा सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का मध्यमान 71.48 व प्रमाणिक विचलन 8.28 है और t का प्राप्त मान 4.126 तालिका मान के दोनों स्तरों से अधिक है अर्थात् 4.126>1.98 or 4.126>2.62 है अपेक्षित मान अधिक होने के कारण परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्षतः परिकल्पना संख्या 4 निजी एवं सरकारी विद्यालयों में अध्ययरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले कारकों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया है। परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है, क्योंकि सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले अधिकतर विद्यार्थियों की आर्थिक स्थिति कमजोर पायी गई, उनके परिवार में अक्सर लड़ाई झगड़े होते रहते है, विद्यालय में भी उचित निर्देशन नहीं मिलने के कारण वे परेशान रहते है। इन सभी कारणों से उनका मानसिक स्वास्थ्य निजी विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा निम्न स्तर का पाया गया।

आरेख संख्या 4.4

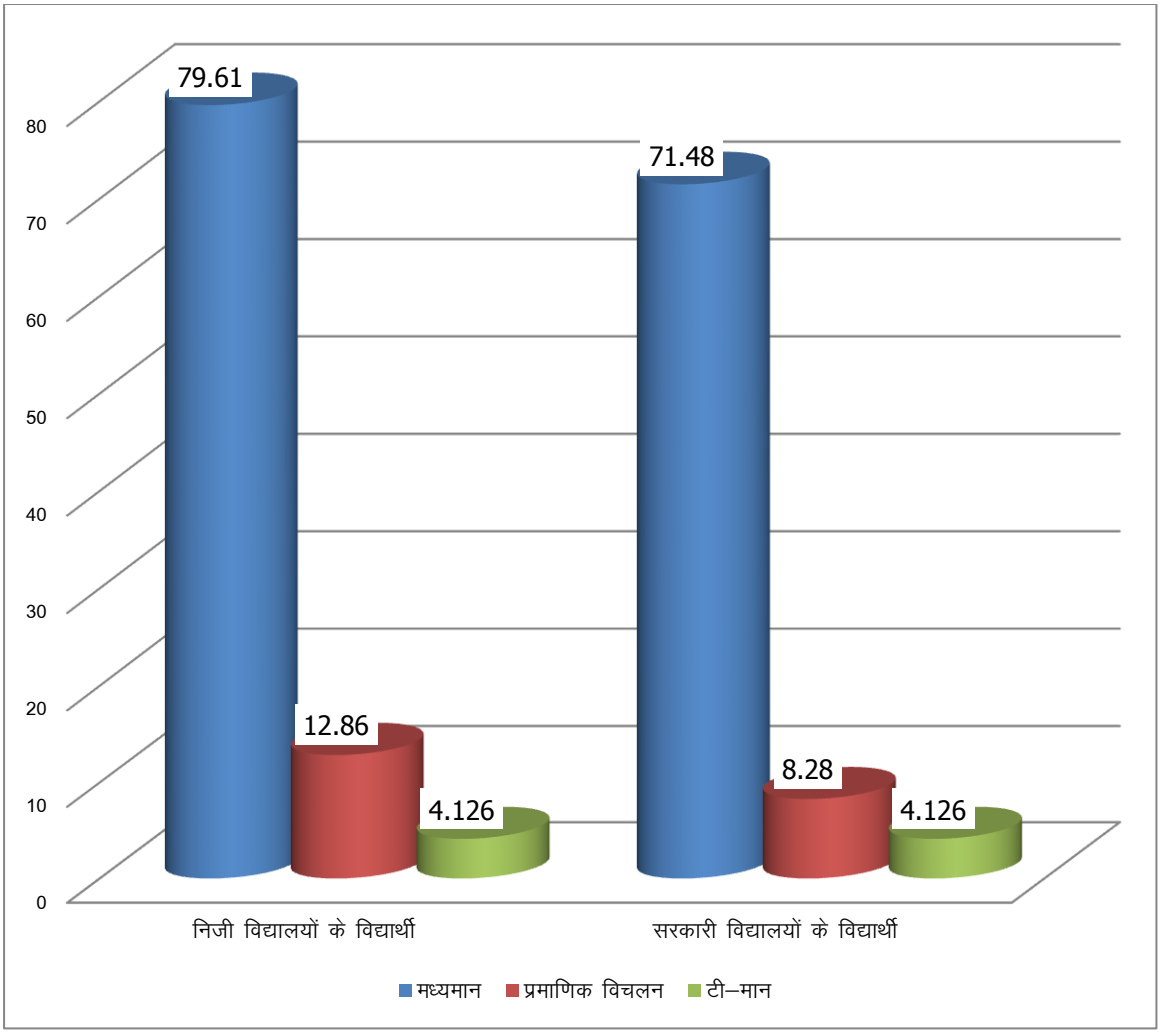

पंचम अध्याय
शोध का सारांश एवं निष्कर्ष

"अध्ययनों के सम्पूर्ण परिणामों की रूचि वाले व्यक्तियों के समक्ष पर्याप्त विचार-विमर्श करने और उनके परिणामों को इस प्रकार व्यवस्थित करना कि प्रत्येक पाठक तथ्यों को समझने और निष्कर्षो की वैधता स्वयं निर्धारित करने में समर्थ हो सके।"

..... अमेरिकन मार्केटिंग सोसायटी

पंचम अध्याय

शोध का शारांश एवं निष्कर्ष

5.1. प्रस्तावनाः–

प्राणी को सुखद एवं सम्पन्न जीवन व्यतीत करने के लिए न केवल शारीरिक रूप से बल्कि मानसिक रूप से भी स्वस्थ होना आवश्यक हैं मानसिक स्वास्थ्य प्रत्येक व्यक्ति के शारीरिक विकास एवं स्वास्थ्य को अनेक घटक प्रभावित करते हैं जैसे विद्यालयी वातावरण, पारिवारिक वातावरण, सामाजिक वातावरण, सामाजिक प्रभाव, कक्षा का वातावरण आदि। जैसे–जैसे बालक का मानसिक विकास होता है। वह उन्हीं चीजों को ग्रहण करता है। परिवार समाज विद्यालय के अन्तर्गत बहुत से ऐसे घटक होते हैं जो किसी न किसी रूप में बालक के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करते है। मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति कम समय में ही कठिन से कठिन कार्य को भी आसानी से कर लेता है। तथा उसमें समायोजन की भी योग्यता होती है।

5.2. समस्या कथनः–

"विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं एवं सम्बंधित कारकों का विश्लेषणात्मक अध्ययन"

5.3. शोध के उद्देश्यः–

(1). विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं एवं संबंधित कारको का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।

(2). स्रकारी विद्यालयों में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के छात्र और छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन करना।

(3). निजी विद्यालयों में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के छात्र और छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन करना।

(4). निजी व सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन करना।

(5). निजी व सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले कारकों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

5.4. शोध की परिकल्पनाएँः–

(1). स्रकारी विद्यालयों में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के छात्र और छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

(2). निजी विद्यालयों में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के छात्र और छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक नहीं पाया जाता है।

(3). निजी एवं सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता हैं।

(4). निजी एवं सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले कारकों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

5.5. शोध विधिः–

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि है।

5.6. न्यादर्शः–

प्रस्तुत शोध प्रबंधन में शोधकर्त्री द्वारा माध्यमिक स्तर के सरकारी व निजी विद्यालयों में अध्ययनरत 120 विद्यार्थियों को लिया गया है।

5.7. उपकरणः–

प्रस्तुत शोध प्रबंधन में शोधकर्त्री द्वारा–

(1). मनसिक स्वास्थ्य परीक्षण संबंधी प्रश्नावली (स्वनिर्मित) तथा

(2). मनसिक स्वास्थ्य संबंधी कारकों की अनुसूची (स्वनिर्मित) का प्रयोग किया है।

5.8. शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी –

शोध में निम्नलिखित सांख्यिकी का प्रयोग किया गया हैं–

(1). मध्यमान–

सूत्रः–$\bar{X} = \frac{\sum X}{N}$

(2). प्रामाणिक विचलन (S.D.)–

$$S.D. = \sqrt{\frac{\sum d^2}{N}}$$

(3). टी मान ('T' Test)–

$$T = {}^{M1-M2}\sqrt{\frac{(\sigma 1)^2}{N1} + \frac{(\sigma 2)^2}{N2}}$$

5.9. शोध के परिणाम एवं निष्कर्षः–

प्रस्तुत लघुशोध प्रबंधन विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं एवं संबंधित कारकों का विश्लेषणात्मक अध्ययन से संबंधित है। अध्याय चार के अन्तर्गत संग्रहित तथ्यों का संख्यिकीय विधियों से विश्लेषण किया और उसके आधार पर विभिन्न प्रकार के तथ्य सामने आये और परिकल्पनाओं की जाँच की गई। प्राप्त सभी परिणाम विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य तथा उसको प्रभावित करने वाले कारकों से संबंधित है।

इन सबके आधार पर निम्न निष्कर्ष पाये गयेः–

सारणी 4.1 में उल्लेखित परिणामों के आधार पर शून्य परिकल्पना संख्या 1 सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के छात्र और छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता हैं स्वीकृत होती है। दोनों समूहों के मध्यमानों को देखने के उपरान्त यह निष्कर्ष पाया गया कि सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के छात्रों के समूह का मध्यमान छात्राओं के समूह के मध्यमान से अधिक हैं अर्थात् सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की अपेक्षा छात्राओं का मानसिक स्वास्थ्य निम्न हैं लेकिन यह अन्तर सार्थक नहीं पाया गया।

सारणी 4.2 में उल्लेखित परिणामों के आधार पर शून्य परिकल्पना संख्या 2 निजी विद्यालयों में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के छात्र और छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता हैं स्वीकृत होती है। दोनों समूहों के मध्यमानों को देखने से यह निष्कर्ष

निकलता हैं कि निजी विद्यालयों में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के छात्रों के समूह का मध्यमान निजी विद्यालय की छात्राओं के समूह के मध्यमान से कम हैं अर्थात् निजी विद्यालयों के छात्रों की अपेक्षा छात्राओं का मानसिक स्वास्थ्य उच्च हैं लेकिन यह अन्तर सार्थक नहीं पाया गया।

सारणी 4.3 में उल्लेखित परिणामों के आधार पर शून्य परिकल्पना संख्या 3 निजी एवं सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के छात्र और छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता हैं अस्वीकृत होती है। दोनों समूहों के मध्यमानों को देखने के उपरान्त यह निष्कर्ष निकलता हैं कि निजी विद्यालयों में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के छात्रों के समूह का मध्यमान सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का मध्यमान सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों से अधिक हैं अर्थात् निजी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य उच्च हैं तथा सार्थक अन्तर पाया गया।

सारणी 4.4 में उल्लेखित परिणामों के आधार पर शून्य परिकल्पना संख्या 4 निजी एवं सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के छात्र और छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले कारकों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता हैं अस्वीकृत होती है। दोनों समुहों के मध्यमानों को देखने से यह निष्कर्ष निकलता हैं कि निजी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों के समूह का मध्यमान सरकारी विद्यालयों में

अध्ययनरत छात्रों के समूह के मध्यमान से अधिक है। अर्थात् निजी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य उच्च हैं तथा सार्थक अन्तर पाया गया।

5.10. शैक्षिक निहितार्थः–

कोई भी शोध कार्य तभी सफल माना जा सकता हैं जब वह शिक्षा के क्षेत्र में अथवा समाज और राष्ट्र के लिए ऐसा योगदान प्रस्तुत करता हो जो कि दूरगामी समस्याओं के समाधान के लिए आवश्यक हो। प्रस्तुत अध्ययन "विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ संबंधी समस्याओं एवं संबंधित कारकों का विश्लेषणात्मक अध्ययन" करने के लिए एक सर्वेक्षणात्मक रूप में किया गया है। अतः प्राप्त निष्कर्षो के शैक्षिक अनुप्रयोग निम्नलिखित हो सकते है।

(1). इस अध्ययन के द्वारा विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य के स्तर का पता लगाया जा सकता हैं अतः प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में उन्नति हेतु कार्य योजना के लिए सुझाव प्रस्तुत किया जा सकता है।

(2). प्रस्तुत शोध से प्राप्त निष्कर्ष सामान्य रूप से विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य और प्रभावित करने वाले कारकों के विषय में शोधकर्ताओं को भावी सुधार कार्य हेतु प्रेरित करने में सहायक सिद्ध होगें।

(3). प्रस्तुत शोध विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य के विकास हेतु मार्गदर्शन में सहायक सिद्ध होगा।

(4). प्रस्तुत शोध अभिभावकों के लिए इस रूप में सहायक सिद्ध होगा कि वे विद्यार्थी के मानसिक विकास के लिए प्रयास करेंगे।

(5). प्रस्तुत शोध अध्यापकों के लिए इस रूप में सहायक सिद्ध होगा कि वे विद्यार्थी के मानसिक विकास के लिए प्रयास करेंगें।

5.11. भावी शोध हेतु सुझावः–

(1). प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के रूप में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को लिया गया हैं अतः एक अध्ययन प्राथमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर भी किया जा सकता है।

(2). प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध में उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले कारकों में विद्यालय, घर और समाज को ही लिया गया हैं एक शोध, वंशानुक्रम, शारीरिक स्वास्थ्य को भी सम्मिलित करके किया जा सकता है।

(3). प्रस्तुत शोध प्रबंध में शोधकर्त्री ने शोध कार्य को अलवर जिले के कोटकासिम तहसील तक ही सीमित किया गया हैं भविष्य में इस अध्ययन को राजस्थान के अन्य जिलों पर भी किया जा सकता है।

(4). यह अध्ययन आदिवासी क्षेत्रों, पहाडी क्षेत्रों, पिछडे व रेतीले क्षेत्रों के विद्यार्थियों का प्रतिदर्श लेकर किया जा सकता है।

(5). इस शोध अध्ययन में शोधकर्त्री द्वारा डाटा के लिए चार विद्यालयों को ही चुना गया हैं भविष्य में इस अध्ययन को अधिक विद्यालयों पर डाटा डालकर भी कर सकते है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

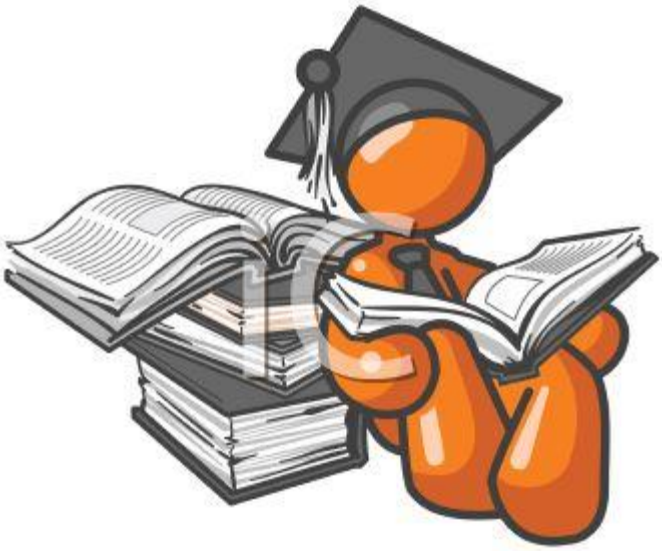

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. ओझा, आर.के., (1994), "व्यावहारिक मनोविज्ञान" साहित्य प्रकाशन, आगरा।
2. भाटिया, के.के., (2006), "शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का मनोविज्ञान," कल्याणी पब्लिशर्स, लुधियाना।
3. जैन, बी.ए. (2007), "रिसर्च मैथडोलाजी," रिसर्च पब्लिकेशन्स, जयपुर।
4. कपिल, एच.के., (2003), "अनुसंधान विधियां," पुस्तक भवन, आगरा।
5. मंगल, महेन्द्र कुमार, (2014), "शिक्षा मनोविज्ञान," Phi Learning Private Limited Delhi
6. माथुर, एस.एस., (2001), "शिक्षा मनोविज्ञान" विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
7. मिश्रा, महेन्द्र कुमार, (2007), "किशोर मनोविज्ञान" युनिवर्सिटी बुक हाऊस, प्रा.लि.
8. परासर, प्रतिभा व भागर्व सुनीता, (2016), "बाल्यावस्था एवं अभिवृद्धि" राखी प्रकाशन प्रा.लि., आगरा।
9. पाठक, पी.डी. (2008), "शिक्षा मनोविज्ञान," अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।
10. सरीन एण्ड सरीन, (2008), "शैक्षिक अनुसंधान विधियां," विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
11. सिंह, अरूण कुमार, (2013), "मनोविज्ञान समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियां, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली।"
12. सिंह रामपाल व शर्मा ओ.पी., (2007/08), "शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा"

13. सुखिया, एस.पी., (1964), "शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

14. शर्मा, आर.ए., (2009), "शैक्षिक अनुसंधान," आर लाल बुक डिपो, मेरठ

15. श्री वास्तव, अजय कुमार, (2004), "मनोविकृति विज्ञान" विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

16. श्री वास्तव, डी.एन., (2007), "सांख्यिकी एवं मापन" अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।

17. वर्मा, प्रीति व श्री वास्तव, डी.एच. (2007), "बाल मनोविज्ञान बाल विकास," विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

जर्नल्स एवं पत्रिकाएं

1. Indian Education Review] Volume 53, Number 2
2. एडयूट्रेक, नीलकमल पब्किशन, वॉल्यूस–9 नं. 10 हैदराबाद

Website

1. www.google.com
2. www.wikipedia.com
3. shodhganga.inflibnet.ac.in

परिशिष्ट